# निवेदन

यह पुस्तिका गुजरातके प्रसिद्ध भक्त लेखक स्व० अमृतलाल सुन्दरजी पढ़ियारकी 'बालकोनी बातों' का अनुवाद है। अनुवादमें मूल पुस्तकका कुछ भाग कहीं-कहीं छोड़ दिया गया है, कहीं दो-चार पंक्तियाँ बढ़ायी भी गयी हैं। मूल पुस्तक श्रीभिक्षु अखण्डानन्दजीके द्वारा स्थापित 'सस्तुं साहित्यवर्धक कार्यालय' अहमदाबादसे प्रकाशित हुई थी। स्व० स्वामी अखण्डानन्दजीके साथ हमारा बड़ा स्नेह-सम्बन्ध था। अतएव उन्होंने गीताप्रेसकी सभी पुस्तकें यथेच्छ अनुवाद करके प्रकाशित करनेकी अनुमति हमसे ले ली थी, तद्नुसार उन्होंने कई ग्रन्थोंका अनुवाद प्रकाशित भी किया था और हमपर कृपा करके उन्होंने अपने किसी भी ग्रन्थके अनुवादकी प्रकाशित करनेकी हमें अनुमति दे दी थी। इसके लिये हम उनके आभारी हैं; परन्तु अभीतक गीताप्रेसकी ओरसे 'सस्तुं सहित्यवर्धक कार्यालय' की किसी पुस्तकका अनुवाद प्रकाशित नहीं हुआ था। यही पहली पुस्तक है।

गीताप्रेसद्वारा बालसाहित्य-प्रकाशनकी भी यही पहली पुस्तक है। इसमें बात-चीतके रूपमें बहुत ही उत्तम उपदेश दिया गया है। आशा है, हमारी शिक्षा-संस्थाओं और अभिभावकोंके द्वारा इस पुस्तकका आदर होगा तथा हमारे बालकोंके लिये यह बहुत लाभकारी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

श्रीहरिः

# विषय-सूची

विषय पृष्ठ-संख्या



# ईश-प्रार्थना

हे भगवान हे भगवान।
हम सब बालक हैं अज्ञान ॥
तुम हो माता-पिता हमारे।
हर लो सबके पातक सारे ॥
करें सभीसे सदा प्रेम हम।
हरें सभीका दुखःदोष हम ॥
सबका भला सदा ही चाहें।
दूर करें दुखियोंकी आहें ॥
माता-पिता-गुरु आज्ञा मानें।
उनको परमेश्वर सम जानें ॥
सेवा करें सदा तन मनसे।
धनसे, जीवनसे यौवनसे ॥
गुस्सेको आते ही मारें।
क्षमा नम्रता मनमें धारें ॥

करें किसीसे नहीं लड़ाई ।
करें किसीकी नहीं बुराई ॥
नहीं किसीको गाली देवें ।
कोई दे तो हम सह लेवें ॥
मारें पीटें नहीं किसीको ।
कभी सतावें नहीं किसीको ॥
झूठ न बोलें चोज न लेवें ।
सदा सत्यको मनसे सेवें ॥
राम-नामका जाप करें नित ।
रामायणका पाठ पढ़ें नित ॥
गीताजीके श्लोक पढ़ें नित ।
गुरुओंके हम चरण पड़ें नित ॥
पढ़ें पढ़ावें खेलें खावें ।
ईश--कृपासे मौज उड़ावें ॥
दो प्रभु हमको यह वरदान ।
हे भगवान हे भगवान ॥

श्रीपरमात्मने नमः

# बालकोंकी बातें

एक गलीमें कुछ लड़के खेल रहे थे। वहाँ जाकर बुद्धिनाथ नामके एक लड़केने कहा--

'मणिशंकर! यहाँ तो आओ, यह पोथी बड़े मजेकी है।'

यह सुनकर मणिशंकरने कहा--'पोथी मजेकी है तो इससे हमें क्या? हम इसमें क्या समझें?'

बुद्धिनाथ बोला--'इस पोथीमें ऐसी बातें हैं जो हम समझ सकते हैं; इसीलिये तो मैंने तुमको बुलाया है। देखो न, यह पहला ही पाठ 'खेलनेके बारेमें' है, जरा सुनो तो सही।'

यों कहकर बुद्धिनाथ पाठ बाँचने लगा।



# १–खेल-कूद

हमें क्यों खेलना चाहिये ?

यह सुनकर मदन हँस पड़ा और बोला–'इसमें फिर कारण क्या ? हमको खेलनेका मन होता है, इसीलिये हमें खेलना चाहिये ।'

मोहनने कहा–'खेलनेका मन होता है, यह बात ठीक है, पर क्यों खेलनेका मन होता है ? इसका भी कुछ कारण तो होना चाहिये ।'

यह सुनकर मगनने पूछा—'तब बतला दो इसका कारण क्या है ?'

मोहनने कहा—'इसके बारेमें मुझे कुछ मालूम नहीं, पर यह पाठ बाँचकर देखो तो मालूम हो जायगा।'

## बालकोंको प्रतिदिन खेलना ही चाहिये

इसके बाद बुद्धिनाथ पाठ बाँचने लगा। उसमें लिखा था—अपने गाँवमें जो अच्छे खेल चलते हों वे खेल लड़कोंको जरूर खेलने चाहिये; क्योंकि खेलनेसे शरीरमें बल आता है। खेलनेसे खाया हुआ पच जाता है, खेलनेसे मन प्रसन्न रहता है, खेलनेसे नये-नये भाई-बन्धु मिलते हैं, खेलनेसे हाथ, पैर, आँख, कान आदिकी चतुराई बढ़ती है, खेलनेसे बातचीत करनी आती है, खेलनेसे हिम्मत बढ़ती है और खेलनेसे मजेकी नींद आती है। खेलनेका शौक होनेसे झगड़े कम हो जाते हैं; खेलनेसे कई तरहके रोग मिट जाते हैं, खेलसे मान भी प्राप्त किया जा सकता है, खेलके आनन्दसे

पढ़नेकी थकावट मिट जाती है और खेल-कूदसे ही बालक जल्दी बड़े हो सकते हैं। इसलिये बालकोंको हर रोज खेलना ही चाहिये।

## हमें किस रीतिसे खेलना चाहिये ?

यह सुनकर मगन बोल उठा—'वाह रे वाह ! यह पोथी तो बहुत ही मजेकी है। खेलनेकी बात तो मुझे अच्छी लगी, अब तो हम रोज खूब खेलेंगे।'

'मेरी माँ खेलने न देगी तो मैं यह पोथी उसको बँचा दूँगा। कहो कैसा मजा है।' यों कहकर वह कामेश्वरके हाथपर ताली बजाकर नाचने-कूदने लगा।

यह सुनकर गेंद उछालते हुए हरिनारायणने कहा—'खेलनेमें ही मानिकलालका पैर टूटा था, इसकी खबर है ?'

बुद्धिनाथ बोला—'पूरा पाठ सुननेके पहले ही क्यों गड़गड़ मचाते हो ? कैसा खेल खेलना चाहिये यह तो जरा सुन लो।'

## खेलनेके नियम

माता-पिताकी और शिक्षककी आज्ञा लेकर हमें खेलना चाहिये। ऐसा खेल खेलना चाहिये, जिसमें मन लगे और शरीरको बोझ न मालूम हो, किसीको नुकसान न पहुँचे और शरीर मजबूत हो। हमें इस तरह खेलना चाहिये कि पढ़नेमें या काम-काजमें अड़चन न पड़े। झूठ न बोलना पड़े, मार-पीट न करनी पड़े, बहुत खर्च न करना पड़े और जोखिम न हो, ऐसा सीधा-सादा और बहादुरी बढ़ानेवाला खेल खेलना चाहिये। हमारा अपना भला हो, खेलको देखकर हमारे मा-बाप प्रसन्न हों, हमारे मनमें आनन्द हो और हमारे अन्दर दक्षता बढ़े—इस रीतिसे हमें खेलना चाहिये। बालकोंके स्वभावमें कुदरती नियमसे खेलनेका बहुत जोर होता है। इसलिये सभी लड़के पहले खेलना सीखते हैं और फिर खेल-ही-खेलमें जैसे-जैसे उनकी शक्तियोंका विकास होता जाता है, वैसे-वैसे उनमें बुद्धिमानी भी आती जाती है। इसलिये सब लड़कोंको पहले अच्छी तरह खेलना सीखना चाहिये।

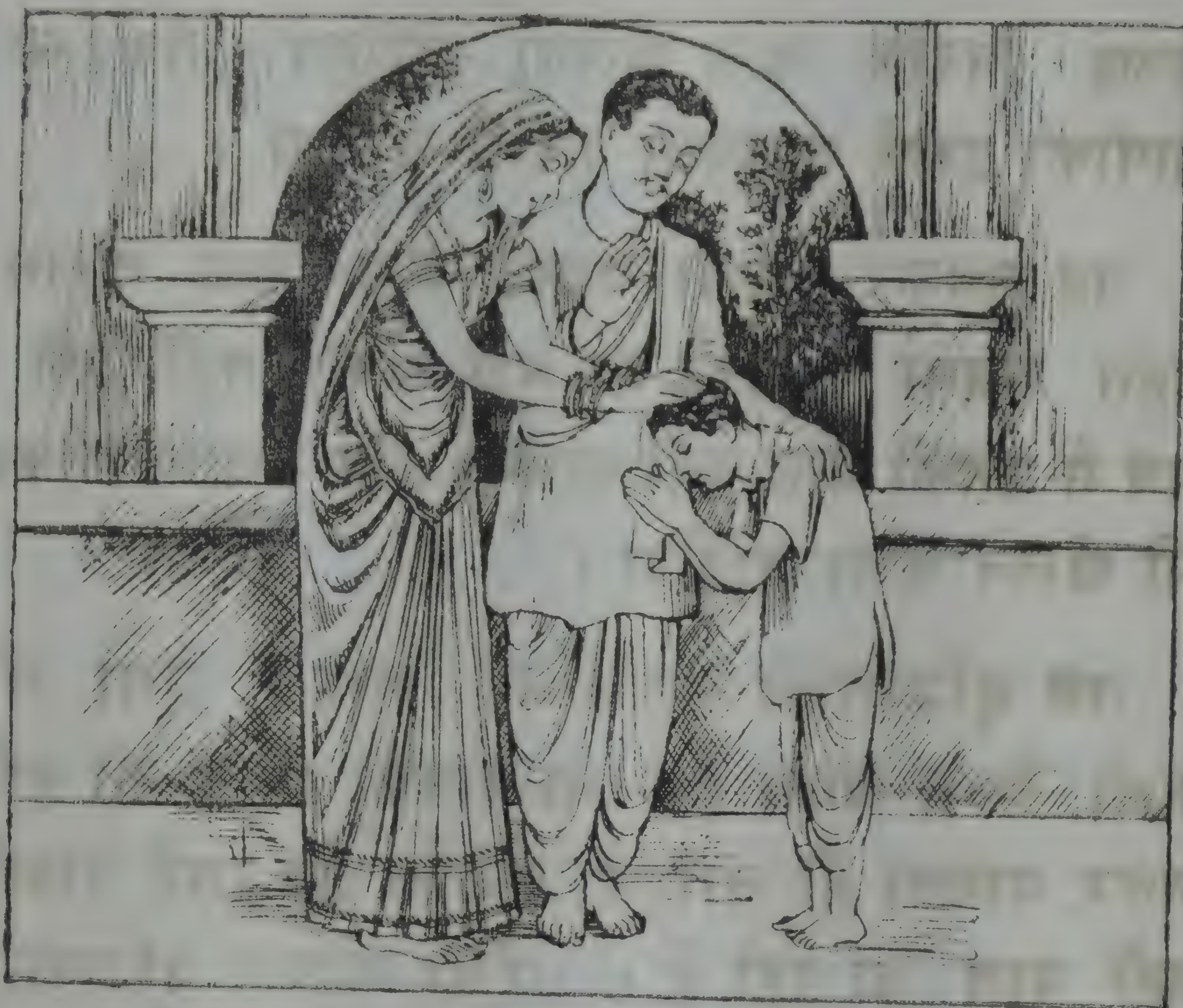
# जो खुलकर नहीं खेलते, उनको बहुत नुकसान होता है

खेल शरीरको सुधारनेकी तथा अभ्यासकी पहली सीढ़ी है। इसलिये जो लड़के इस पहली सीढ़ीपर न चढ़े हों, यानी जिनको खूब खेलना न आता हो, जिनको खेलनेकी आदत न हो, अथवा जो मा-बाप अपने बच्चेको खुलकर आवश्यकतानुसार नहीं खेलने देते हों, वे लड़के शरीरसे निर्बल और स्वभावमें रोनी सूरतवाले होते हैं। ऐसे लड़कोंके हाथ-पैर सुतली-जैसे होते हैं और पेट हाँडी-जैसा निकला हुआ। छाती निर्बल होती है और बुद्धि थोड़ी। पढ़ने-लिखनेमें या घरके काम-काजमें वे ढीले होते हैं और यह ढीलापन उनको सभी बातोंमें बाधा पहुँचाया करता है। इससे वे चिड़चिड़े स्वभाववाले और उदाससे बन जाते हैं। बालकपनसे ही ऐसी खराब हालत होना बहुत ही बुरा है। इसलिये सभी लड़कोंको अपनेमें बुद्धिमानी और बहादुरी बढ़ानेवाले अच्छे-

अच्छे निर्दोष खेल खेलना चाहिये और मा-बापोंको इसमें सहायता करनी चाहिये ।

यह सुनकर हरिनारायणने कहा—'मुझे खेलना बहुत रुचता है, मेरी मा मुझे खेलने नहीं देती । अब मैं उनकी बात नहीं मानूँगा और मना करनेपर भी खेलने चला जाऊँगा ।'

तब बुद्धिनाथने कहा—'अरे भाई ! ऐसा भी कभी किया जाता है ! मा-बापका कहना तो हमें जरूर मानना ही चाहिये; क्योंकि इस दूसरे पाठमें यही बात आ रही है ।' ऐसा कहकर बुद्धिनाथ दूसरा पाठ पढ़ने लगा ।



# २—माता-पिता

## किसलिये मा-बापका कहना मानना चाहिये ?

हम बालक हैं, इससे अभी हममें बुद्धि थोड़ी है, परन्तु हमारे मा-बाप हमसे बहुत बड़े हैं, बुद्धिमान् हैं और हमारे सुखके लिये बहुत ध्यान रखते हैं। इसलिये हमें अपने मा-बापका कहना मानना

चाहिये । अपना भला किसमें है, यह हम अभी नहीं समझते । पर हमारे मा-बाप समझते हैं। इसलिये हमें उनका कहना मानना चाहिये । हमारे मा-बाप हमको खाना-पीना देते हैं, पहननेके लिये कपड़ा देते हैं, अपने घरमें रहने देते हैं और हमको सुखी रखनेके लिये तरह-तरहके दुःख उठाते हैं। इसलिये हमें उनका कहना मानना चाहिये। सारे जगत्के भले आदमी अपने-अपने मा-बापका कहना मानते हैं, यही नहीं बल्कि शास्त्रकी भी आज्ञा है। मा-बापको प्रसन्न रखनेसे ईश्वर भी प्रसन्न होता है। इसलिये हमें अपने मा-बापका कहना मानना चाहिये । उनको नित्य प्रणाम करना तथा उनकी सेवा-चाकरी करनी चाहिये । उनका सम्मान करना चाहिये और वही काम करना चाहिये जिससे वे प्रसन्न रहें । उन्होंने हमारे ऊपर इतना उपकार किया है कि किसी प्रकार भी हम उनका बदला नहीं चुका सकते । इसलिये उनको प्रसन्न रखनेके लिये और उनके आशीर्वादसे हमारा भला हो, इसलिये भी हमें उनका कहना मानना चाहिये।

## मा-बापका उपकार

फिर हमें यह भी सोचना चाहिये कि हमारे मा-बाप यदि हमको अपने घरसे निकाल दें तो हमारी कैसी बुरी हालत हो ? हमको खाना न दें तो हम क्या कर सकते हैं ? हम बीमार पड़ें और वे हमारी सँभाल न रखें तो हम कैसे जी सकते हैं ? वे हमको पढ़ना-लिखना न सिखलायें और रोजगार-धन्धा न सिखलायें तो हम जंगली बन जायँ और वे हर बातमें मदद न करें तो हमारी बुरी हालत हो जाय । इन सब बातोंपर हम विचार करते हैं तो अवश्य ऐसा लगता है कि हमारे सुखके लिये ही उनको बहुत प्रकारके दुःख उठाने पड़ते हैं, जैसे कि हमारा पालन-पोषण करनेके लिये ही उनको रोजगार-धन्धोंमें अधिक मेहनत करनी पड़ती है। हम सुखसे रह सकें, इसीके लिये उनको अनेकों बातोंमें गरीबी सहनी पड़ती है। हमारा भला करनेके इरादेसे ही उनको तरह-तरहकी हाय-हायमें पड़ना पड़ता है। हमको सुखी रखनेके लिये ही वे जाड़ा-घाम सहते हैं तथा दूसरोंका अपमान

सहन करते हैं और हमारे लिये सुखके साधन छोड़ जानेके लिये ही वे सब तरहका जंजाल उठाते हैं; क्योंकि हमारे ऊपर उनका बहुत ही स्नेह है। हम बड़े होकर भी उनके इस स्नेह और इस उपकारका बदला नहीं चुका सकते। हमारे मा-बाप इतने दयालु हैं कि वे इससे कुछ नहीं माँगते और केवल इतनेसे ही प्रसन्न हो जाते हैं कि हम उनका कहना मान लें और वे ऐसी बात नहीं कहते, जिससे हमें दुःख हो। इसलिये हम यदि उनका कहा न मानेंगे तो बहुत खराब लड़के कहलायेंगे। जिन्होंने हमपर इतने अधिक उपकार किये हों, जो हमारे लिये रात-दिन तड़पते रहे हों और जिनसे हमारी भलाई हो, ऐसी ही बातें करते हों, उनका भी कहना हम न मानें तो इससे बढ़कर नालायकी और क्या हो सकती है? इसलिये हमको जरूर अपने मा-बापका कहना मानना चाहिये।

## जानवर भी बड़ोंका कहना मानते हैं

अरे! जरा विचार तो करो। बन्दर भी तो मदारीका कहा मानता है। गाय-भैंस भी चरवाहे-

का कहना मानती हैं और गधा भी अपने मालिक-का कहना मानता है। फिर भी हम अपने मा-बापका कहना न मानें, यह कितनी बुरी बात है ? इतना ही नहीं, अनका कहना न माननेसे हमें बहुत पाप लगता है और अपने मा-बापके ऊपर हमप्रेम नहीं रक्खेंगे तो ईश्वर भी हमपर प्रेम नहीं करेगा। इसलिये हमको अपने मा-बापका कहना अवश्य मानना चाहिये और वे जिसमें प्रसन्न रहें, वही करना चाहिये।

## अबसे मैं हमेशा मा-बापका कहना मानूँगा

यह सुनकर मणिशंकरने कहा—'ओहो! मा-बाप का कहना माननेमें इतने अधिक लाभ हैं और उनका कहना न माननेमें इतना अधिक नुकसान है, यह बात मैं जानता नहीं था। बुद्धिनाथ! तुमने बहुत अच्छा किया जो यह बात हमें सुना दी। अबसे मैं हमेशा अपने मा-बापका कहना मानूँगा।'

मगन बोला—'मैं भी कभी-कभी अपने मा-बाप-का कहना नहीं मानता था, पर अब मानूँगा।'

हरिनारायणने कहा—'दूसरी सारी बातोंमें तो

मैं अपने मा-बापका कहना मानता हूँ; पर मैं खेलने न जाऊँ—उनकी यह बात मैं नहीं मानता था। परन्तु आजका पाठ सुननेके बाद अब यह बात भी मुझे माननी पड़ेगी।'

कामेश्वर बोला—'मैं भी दूसरी सारी बातोंमें अपने मा-बापका कहा मानता हूँ। परन्तु वे विद्यालय जानेके लिये कहते हैं, यह मुझको अच्छा नहीं लगता। इसलिये इस बातमें मैं उनका कहना नहीं मानता था।'

## अपने ज्ञानका लाभ भाई-बहिनोंको देना चाहिये

यह सुनकर बुद्धिनाथने कहा—'हमें क्यों पढ़ना चाहिये ? यह पाठ भी इस पोथीमें है। उसे सुनोगे तो तुम्हारा पढ़नेका बहुत मन हो जायगा। परन्तु आज तो हमारा कसरत करनेका समय हो गया है, चलो गेंद खेलने चलें। कल इसी समय विद्यालयसे छूटनेपर वह पाठ बाँचूँगा। हर रोज ऐसे दो पाठ बाँचें और उनपर विचार करें तथा अपने घर और गलीमें अपने भाई-बहिनोंको कह सुनायें

तो भी बहुत अच्छा हो।' इतना कहकर बुद्धिनाथ उठा और उसके साथ सब लड़के चले गये।

इसके बाद दूसरे दिन विद्यालयसे छुट्टी मिलते ही तुरन्त वे सभी लड़के बुद्धिनाथके घर पहुँच गये।

वहाँ जाकर मगनने कहा—'कल तुमने जिस पाठके बारेमें कहा था, उसे बाँचकर सुनाओ। उसे सुननेके लिये मैं मणिशंकर और शकुन्तला बहिनको भी अपने साथ बुला लाया हूँ।'

बुद्धिनाथने कहा—'ओहो! यह तो बहुत खुशीकी बात है; क्योंकि जैसे हम बहुतेरी खानेकी वस्तुएँ बाँटकर खाते हैं, उसी प्रकार अपने ज्ञानका लाभ भी अपने भाई-बहिनोंको देना चाहिये। तुम शकुन्तला बहिनको बुला लाये यह बहुत अच्छा किया; क्योंकि इसकी वजहसे मेरी लीला बहिन भी सुन लेगी, नहीं तो यह शरमीली लड़की हमारा पाठ नहीं सुनती।' ऐसा कहकर बुद्धिनाथने बाँचनेके लिये पोथी हाथमें ली।

# ३—पढ़ाई

## हमें क्यों पढ़ना चाहिये ?

भाइयो और बहिनो ! यहाँ आओ । मैं तुमको एक मजेकी बात कहूँगा । तुम अभी बालक हो, परन्तु कोई हमेशा बालक नहीं रहेगा । कुछ वर्षोंमें तुम जवान हो जाओगे, तुम्हें रोजगार-धन्धा करना पड़ेगा । नौकरी-चाकरी करनी पड़ेगी । और कुछ वर्षोंमें तुम बड़ी मूँछोंवाले बहादुर जवान बन जाओगे । उस समय तुमको रुपया-पैसा, मान-सम्मान और काम-काजकी जरूरत पड़ेगी । ये सारी चीजें, क्या तुमको गुल्ली-डण्डेसे मिल जायँगी ? ये सारी चीजें, तुम दौड़कर जो तालाबमें नहाने जाते हो, इससे मिल जायँगी ? ये सारी चीजें बन्दरके समान कूद-फाँद करनेसे तुम्हें मिल जायँगी ? ये सब क्या तुम्हारी धींगामस्तीसे मिल जायँगी ? और यह सब क्या कौड़ी खेलनेसे या

ताश-चौपड़ खेलनेसे अथवा गेंद उछालनेसे मिल जायँगी ?

नहीं, इनमेंसे किसीसे भी ये चीजें मिलनेवाली नहीं हैं। लेकिन बच्चो ! याद रखना, ये सारी चीजें पढ़नेसे ही मिल सकती हैं।

## पढ़नेसे होनेवाला लाभ और न पढ़नेसे होनेवाला पछतावा

तुम्हें बहुत ध्यान देकर और प्रेम तथा आनन्दसे पढ़ना चाहिये और खूब मेहनत करके पढ़ना चाहिये। अभी तुम पढ़नेकी कीमत नहीं समझते, इसीसे तुम्हें पढ़ना अरुचिकर लगता है; पर जब तुम पढ़नेका लाभ समझ लोगे तब तुमको ऐसा लगेगा कि हमने पढ़नेमें जो आलस्य किया, वह बहुत ही बड़ी भूल की। यही नहीं, यदि अभी ध्यान देकर न पढ़ोगे तो जब बड़े होओगे तब तुमको यह पछतावा होगा कि हम पढ़े होते तो इस दुनियामें जानने योग्य बातोंको जान सकते। यदि पढ़े होते तो बहुत-सी बातोंमें नया-नया

आनन्द प्राप्त कर सकते। यदि पढ़े होते तो बड़े आदमी हुए होते। यदि पढ़े होते तो दूसरोंका भला कर सकते। यदि पढ़े होते तो अपने मा-बापको तथा पुत्र-कन्याओंको अबकी अपेक्षा अधिक सुखी कर सकते। यदि पढ़े होते तो तरह-तरहके बहमोंसे और दुःखोंसे छुटकारा पा सकते। यदि पढ़े होते तो बहुत-सी वस्तुओंके भेद खुल गये होते, हमारी बुद्धिमें कोई नया तेज आ जाता। हमारी रहन-सहनमें ऊँचे पुरुषोंके लक्षण आ जाते और पढ़नेसे अज्ञानका पर्दा हट जाता, उससे हमारे विचारोंमें एक नयी ही झलक और नया ही बल आ जाता। अहा ! पढ़नेके लाभकी कितनी बातें बतायी जायँ। इसकी खूबी तो कुछ और ही है।

## तुम मूर्ख रहना पसन्द करते हो या बुद्धिमान होना ?

अब बोलो, मेरे प्यारें लड़को! तुम्हें क्या पसन्द है ? मूर्ख रहना चाहते हो या बुद्धिमान् होना ? यदि बुद्धिमान होना चाहते हो तो ध्यान

देकर पढ़ो। तुम्हें गरीब रहना अच्छा लगता है या पैसेवाला बनना ? यदि पैसेवाला बनना अच्छा लगता हो तो प्रेमसे पढ़ो। तुम अपमान पसन्द करते हो या मान पाना चाहते हो ? यदि तुम्हें मान पसन्द है तो खूब मेहनत करके पढ़ो। तुम मजदूर रहना चाहते हो या मालिक बनना ? यदि मालिक बनना चाहते हो तो दुःख उठाकर भी विद्याभ्यास करो। राजा तुम्हारी बात भी न सुने, यह तुमको पसन्द है या तुम्हारी मर्जीके अनुसार तुम्हारे देशके कायदे-कानून बनें यह तुम्हें पसन्द है ? जिसमें तुम्हारा भला हो, ऐसे कायदे-कानून बनवानेकी इच्छा हो तो खूब पढ़ो। अपमान सह-सहकर और मार खा-खाकर तुम्हें दूसरोंके आश्रयमें पड़े रहना पसन्द है या दूसरोंको अपने आश्रयमें रखकर उनकी मदद कर सको, यह पसन्द है ? यदि दूसरोंसे मार न खानी हो और स्वतन्त्र रहना हो तो तुम खूब पढ़ो। तुम्हारे मा-बाप तुमको नालायक समझें और टीका करें, तुम्हें यह पसन्द है या तुम्हारे मा-बाप तुम्हारी प्रशंसा करें और

तुम्हारा मान करें, यह पसन्द है ? यदि तुम्हें मान पाना अच्छा लगता है तो तुम खूब पढ़ो । तुमको टूटा-फूटा घर, फटे-पुराने कपड़े, दुर्गन्धभरे हाँडी-मटके, फूहड़ स्त्री और मुर्दे-जैसी रोनी सूरतवाले बच्चे अच्छे लगते हैं या घर, गृहस्थीका सुन्दर भवन अच्छा लगता है ? यदि तुमको दरिद्रता अच्छी नहीं लगती और तुम वैभव चाहते हो तो तन-मनसे खूब मेहनत करके तथा अपने मा-बापकी शक्तिके अनुसार खूब खर्च करके पढ़ो । तभी तुम सुखी हो सकोगे ।

## पढ़नेसे क्या होता है ?

याद रक्खो कि पढ़नेसे ही सोने-चाँदीकी खानोंकी खोज हुई है । खूब पढ़े हुए लोग ही बड़े व्यापार और परोपकारके काम कर सकते हैं । खूब पढ़नेसे ही बड़े-बड़े पद मिल सकते हैं । खूब पढ़नेसे ही संसारको लाभ पहुँचानेवाली नयी-नयी खोज की जा सकी है और भाँति-भाँतिके कारखाने चल रहे हैं । ये सब विद्या और कलाके अभ्याससे ही हुए

हैं। इसलिये तुम्हें खूब ध्यान देकर अवश्य ही पढ़ना चाहिये।

## पढ़नेके लिये तुम्हें अभी बहुत अच्छा अवसर है

मेरे प्यारे लड़को! तुम्हारे पढ़नेके लिये बड़ा अच्छा मौका है। बहुत-से विद्यालय हैं, बहुतेरी पुस्तकें हैं और अध्यापकोंकी भी कमी नहीं है। फिर थोड़े ही खर्चमें लिख-पढ़ सकते हो, इसलिये तुम्हें जरूर प्रेमपूर्वक पढ़ना चाहिये। ऐसा मौका मिलनेपर भी यदि तुमने पढ़नेमें आलस्य किया तो बड़ा होनेके बाद ऐसा मजेदार मौका फिर मिलनेवाला नहीं है; क्योंकि तुम जबतक लड़के हो, तबतक ईश्वरकी कृपासे तुमको खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, घर-बार सँभालने, धन्धा-रोजगार करने, स्त्री-बच्चोंकी या मा-बापकी चिन्ता नहीं है। इतना ही नहीं, इस अवस्थामें तुम्हारा अन्तःकरण सरल होता है और नया-नया ज्ञान प्राप्त करनेके लिये वह खुला रहता है। फिर ज्यों-ज्यों उम्र

बड़ी होती जाती है, त्यों-ही-त्यों चिन्ता लगती जाती है और जंजाल बढ़ता जाता है; वैसे-ही-वैसे अन्तःकरण भी मलिन होता जाता है और चित्तवृत्तियाँ कठोर होती जाती हैं, इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करना कठिन हो जाता है। इसलिये जबतक तुम्हारे अन्तःकरणमें उल्टी-सीधी, अच्छी-बुरी छाप नहीं पड़ती, तबतक जानने योग्य सच्ची बातें सीख लो।

## पढ़नेसे होनेवाला लाभ

पढ़नेसे तुम्हारी जवानी सुधरेगी, बुढ़ापेमें तुम्हें धैर्य प्राप्त होगा और चाहोगे तो अपने देशके एक बड़े आदमी बन सकोगे। इतना ही नहीं, बल्कि ध्यान देकर पढ़ोगे तो स्वयं सुखी हो सकोगे, अपने मा-बापको सुखी कर सकोगे, तुम्हारे देशको लाभ होगा और अपने लाखों गरीब भाइयोंकी मदद कर सकोगे। पढ़नेसे ज्ञान और प्रेम बढ़ता है और इससे पढ़नेवालेके ऊपर ईश्वर प्रसन्न होता है तथा जिसके ऊपर ईश्वर प्रसन्न होता है, उसका बहुत ही भला होता है। इसलिये सब लड़कोंको

बहुत ध्यान देकर, खूब मेहनतसे और भरपूर प्रेम रखकर तथा प्रसन्न हो-होकर पढ़ना चाहिये।

## अब तो मैं जरूर पढ़ने जाऊँगा

इसके बाद बुद्धिनाथने कहा—'क्यों, ये बातें तुम्हें अच्छी लगती हैं?'

यह सुनकर कामेश्वर बोला—'बड़े ही मजेकी बात है। अब मैं जरूर पढ़ने जाऊँगा।'

हरिनारायणने कहा—'ऐसे पाठ तो सब लड़कों-को जरूर पढ़ाने चाहिये।'

शकुन्तला बहिन बोली—'यह पोथी तो बहुत ही अच्छी है। तुम पढ़ चुको तब मुझे देना। इसको अपनी माको पढ़ाऊँगी और फिर मैं भी यह पोथी मँगाऊँगी।'

मानिकलालने कहा—'पढ़ने जाना होता' इस बातको लेकर मैं पहले बहुत झगड़ा किया करता था, पर अब तो रोज जाता हूँ और पढ़नेमें मजा भी मिलता है। कभी-कभी आलस्य आ जाता है।

परन्तु यह पाठ सुननेके बाद अब तो इस आलस्यको भी लात मारनी पड़ेगी।

बुद्धिनाथ ! पाठ तो बड़ा मजेदार है, पर ईश्वर क्या वस्तु है ? सभी ईश्वर-ईश्वर कहते हैं, इसलिये मैं भी ईश्वर-ईश्वर कहता हूँ। पर इसकी बाबत कोई ठीक-ठीक बात मेरी समझमें नहीं आती।

यह सुनकर बुद्धिनाथने कहा—'अब चौथा पाठ ईश्वरके विषयमें ही आता है। पर आजका पाठ बहुत ही बड़ा है और विचार करने तथा याद रखने लायक है। इसलिये आज तो इसी पाठके ऊपर बातें करें। ईश्वर विषयका पाठ कल बाँचेंगे।' यों कहकर सब उठे और आजके पाठके बारेमें बातें करते-करते खेलके मैदानकी ओर चले।



# ४–ईश्वर (१)

गुरुजीने अपनी घड़ी दिखाकर एक लड़केसे पूछा–'यह क्या है ?'

लड़केने कहा–'घड़ी है।'

गुरुजीने पूछा–'इसको किसने बनाया ?'

लड़केने कहा–'किसी मनुष्यने बनाया है।'

गुरुजी बोले—'जिस आदमीने इस घड़ीको बनाया है, उसे तुमने देखा है—?'

लड़केने कहा—'नहीं जी, मैंने उस आदमीको नहीं देखा।'

गुरुजी बोले—'देखा नहीं, तब फिर तुमने कैसे जाना कि इस घड़ीको किसी आदमीने बनाया है?'

लड़केने कहा—'अपने आप कभी यह घड़ी बन नहीं सकती; और पेड़, पानी, पत्थर या जानवर घड़ी बना नहीं सकते। घड़ी बनानेकी बुद्धि तो आदमीमें ही है। इसीसे कहता हूँ कि इसे किसी आदमीने ही बनाया है।'

इसके बाद दूसरे लड़केकी ओर देखकर गुरुजीने कहा—'मणिशंकर! तुमने इस बारेमें क्या समझा?'

मणिशंकरने कहा—'जबतक कोई बनानेवाला न होगा, तबतक कोई भी वस्तु अपने-आप नहीं बनेगी। इसलिये इस घड़ीका बनानेवाला होना चाहिये। ऐसी बात जो बिसुन भैयाने कही है, मुझे सच मालूम हो रही है।'

इसके बाद तीसरे लड़केकी ओर देखकर गुरुजी-ने कहा–'हरि ! इससे मिलते-जुलते कोई दूसरे उदाहरण तुम दे सकते हो ?'

हरिने कहा–'हाँ गुरुजी ! इस विद्यालयके मकान बनानेवाले आदमीको हम नहीं पहचानते, और वह आदमी कहाँ है, यह भी हम नहीं जानते। फिर भी हमको निश्चय है कि इस मकानको किसी आदमीने ही बनाया है; क्योंकि मनुष्यकी मेहनतके बिना और मनुष्यकी बुद्धिके बिना ऐसा सुन्दर मकान नहीं बन सकता।'

यह सुनकर गुरुजीने कहा–'तुम ऐसा विश्वास क्यों करते हो ?'

तब उस लड़केने अपने हाथकी पेंन्सिलको दिखाकर कहा–'यह पेंन्सिल किसीके बनाये बिना नहीं बन सकती, यह कुसी किसीके बनाये बिना नहीं बनी और यह मेरे कोटका बटन भी किसीके बनाये बिना नहीं बनता। तब विद्यालयका यह सुन्दर मकान कैसे बिना बनाये बन सकता है ? इसलिये इस मकानका बनानेवाला कोई मनुष्य ही होना चाहिये।'

यह सुनकर गुरुजी बोले—'तुम्हारा अनुमान ठीक है। अब जरा विचार करो कि चाँद-सूरजको किसने बनाया? समुद्रको किसने बनाया? इस धरतीको किसने बनाया? और हम सबको तथा पशु-पक्षीको, लता-वृक्षको किसने बनाया?'

रामप्रसादने कहा—'ईश्वरने।'

गुरुजी पूछा—'तुमने कैसे जाना कि ईश्वरने बनाया?'

रामप्रसाद बोला—'ऐसी अद्‌भुत चीजें मनुष्यसे नहीं बन सकतीं और किसीके बनाये बिना कोई भी वस्तु बन नहीं सकती। इसलिये ईश्वर ही बनानेवाला हो सकता है।'

यह सुनकर दूसरे लड़केकी ओर देखकर गुरुजीने कहा—'गोपालदास! रामप्रसादकी बातसे तुमने क्या समझा?'

गोपालदासने कहा—'जितनी बड़ी, सुन्दर और उपयोगी वस्तुएँ ईश्वर बना सकता है, वैसी मनुष्य या दूसरा कोई नहीं बना सकता। चाँद, सूरज, बिजली, वर्षा आदि वस्तुओंको देखकर इनके

बनानेवालेका विचार हमको करना चाहिये। और इसका विचार करनेपर वह ईश्वर है, ऐसा निश्चय हुए बिना नहीं रह सकता।'

यह सुनकर दूसरे लड़केकी ओर देखकर गुरुजीने कहा—'हुसेन! बड़ी सुन्दर और किसीसे न बन सकनेवाली बहुतेरी उपयोगी वस्तुओंको ईश्वर ही बना सकता है, दूसरा कोई नहीं बना सकता—ऐसा गोपालदास कहता है, क्या यह बात तुमको सच मालूम होती है?'

हुसेन बोला—'गुरुजी! मुझको यह बात सच लगती है।'

गुरुजीने कहा—'यह बात सच लगनेका कारण क्या है?'

हुसेन बोला—'गुरुजी। इसका कारण यह है कि ईश्वर बुद्धिमान्-से-बुद्धिमान् है, भले-से-भला है, रूपवान्-से-रूपवान् है, बड़े-से-बड़ा है। सारी दुनियाका वही एक मालिक है। सारे जीवोंको बनानेवाला है। सारी वस्तुओंका नाश हो जाय तो भी वह कायम रहता है। मनुष्योंके पाप-

पुण्यका इन्साफ करता है। सब तरहकी शक्ति रखनेवाला है और दुनियामें या स्वर्गमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो उसकी बराबरी कर सके। इसलिये वह महान् ईश्वर सब जीवोंके सुखके लिये चाँद, सूरज, समुद्र, आकाश वगैरह बड़ी-बड़ी वस्तुओंको बनाता है, इसमें कोई अचरज नहीं है।'

गुरुजीने कहा—'शाबास हुसेन! तुमने तो खूब कहा। जमशेदजी! ईश्वरके बाबत तुम कुछ कह सकते हो?'

जमशेदजी बोले—'हाँ जी, मेरे बाबाने मुझे सिखलाया है कि ईश्वर हमारा पिता है; क्योंकि वह हमारा पालन-पोषण करता है। वह सब जगह रहता है। वह आकाशमें भी है, पेड़-पौधेमें भी है और हमारे शरीरमें भी है और जहाँ कुछ भी नहीं है, वहाँ भी वह रहता है इसीसे वह हमारी छिपी बातें भी जान लेता है। इतना ही नहीं, जब यह जगत् नहीं बना था, तब भी वह था और इस जगत्का नाश हो जायगा, तब भी वह रहेगा। इतना अधिक बड़ा और इतने अधिक

गुणवाला होनेपर भी वह इतना अधिक दयालु है कि हमारी सारी प्रार्थनाओंको सुनता है और हम जो माँगते हैं, उससे भी अधिक देता है। इसलिये हमें चाहिये कि सदा उसका भजन करें।'

यह सुनकर गुरुजीने कहा—'शाबास! तुमने भी बहुत अच्छी तरह समझा। अब अगले दिन इस विषयमें और अधिक बातें होंगी'—यों कहकर गुरुजीने लड़कोंको विदा किया।

# ५–ईश्वर (२)

दूसरे दिन गुरुजीने कहा–'वामनराव! तुम ईश्वरके विषयमें कुछ जानते हो ?'

तब वामनरावने कहा–'हाँ गुरुजी! मेरी मा जब मन्दिरमें कथा सुनने जाती है तब मैं भी साथ-साथ जाता हूँ। वहाँ मैंने सुना है कि ईश्वर है, है और निश्चय है। उसका कभी जन्म नहीं हुआ, वह कभी बूढ़ा नहीं होता, वह कभी मरता नहीं और न बढ़ता है, न घटता है। उसमें कभी किसी प्रकारका भी हेर-फेर नहीं होता, वह हमेशा जैसा है, वैसा ही रहता है। वह सभी चीजोंके अन्दर भी है और बाहर भी है। उसके मन गरीब और पैसेवाले सभी समान हैं। उसके गुणोंका कोई पार नहीं पा सकता और उसके स्वरूपको पूरा-पूरा कोई भी जान नहीं सकता।'

गुरुजीने कहा–'ईश्वर किसीके द्वारा पूरा-पूरा क्यों नहीं जाना जा सकता ?'

यह सुनकर वामनराव विचारमें पड़ गया। तब हरिहरने कहा—'इसका कारण मैं बतलाऊँ ?'

वामनराव जबाब न दे सका, इसलिये गुरुजीने हरिहरसे पूछा, तब वह बोला 'आदमी अल्पज्ञ है—थोड़ा जानता है और ईश्वर सर्वज्ञ है—सब कुछ जानता है। मनुष्य मरनेवाला है और ईश्वर मरनेवाला नहीं है। मनुष्यके सामने बहुत-सी अड़चनें आती हैं, परन्तु ईश्वरके सामने कोई अड़चन नहीं आती। मनुष्य पाप करता है, पर ईश्वर पाप नहीं करता। मनुष्य जो देख नहीं सकता, उसे ईश्वर देखता है, मनुष्य जो सुन नहीं सकता, उसे ईश्वर सुनता है; मनुष्य जहाँ जा नहीं सकता, वहाँ ईश्वर जा सकता है और मनुष्यसे न हो सकनेवाले काम ईश्वर कर सकता है। इसलिये इस प्रकार सबसे बड़े ईश्वर को मनुष्य पूरा-पूरा नहीं जान सकता।'

गुरुजीने कहा—'वाह, वाह! हरि! हरि! तुमको तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें याद हैं। अब बतलाओ कि ये बातें तुमने कहाँसे सीखी हैं ?

हरिहरने कहा—'यहाँ विद्यालयमें तो ये बातें

होती नहीं, पर दो महीने पहले मैं अपने गाँवमें पढ़ता था, तब वहाँके गुरुजी सप्ताहमें दो बार अपने घर बुलाकर हमें ईश्वरकी बातें सुनाते और प्रसाद देते थे। इससे बहुत लड़के इकट्ठे होते और हम सबको बड़ा आनन्द आता।'

यह सुनकर गुरुजीने कहा—'यह भी बहुत अच्छा रास्ता है। अच्छी बात है, इसके सिवा ईश्वरके विषयमें कुछ और भी तुम जानते हो?'

हरिहरने कहा—'हाँ जी, चरवाहा न हो तो गायें सीधी नहीं चल सकतीं और विद्यालयमें गुरुजी न रहें तो लड़के ऊधम किये बिना नहीं रह सकते। इसी प्रकार ईश्वर न हो तो यह जगत् भी अच्छी तरह नहीं चल सकता?'

गुरुजीने कहा—'ईश्वरके बिना क्यों नहीं चल सकता?'

हरिहर बोला—'सिरपर मालिक न होनेपर जब पशु भी सीधे नहीं चलते, तब पवन, बिजली, वर्षा समुद्र और आकाशके तारे मालिकके बिना कैसे ठीक-ठीक चल सकते हैं? इसलिये इनका बनाने-

वाला कोई एक इनके ऊपर मालिक होना चाहिये और वही ईश्वर है, इसलिये हमें उसका भजन करना चाहिये।'

गुरुजीने कहा—'अच्छा, मान लिया कि इन सबको बनानेवाला और इनको अपने अधीन रखनेवाला ईश्वर है; परन्तु उस ईश्वरका भजन करनेकी हमें क्या आवश्यकता है ?'

हरिहरने कहा—'यह जगत् ईश्वरका बनाया हुआ है। मुझको, आपको और सारे दूसरे आदमियोंको भी ईश्वरने ही बनाया है। हमारे सुखके लिये वह एक गुठलीसे हजारों आम देनेवाला बड़ा-सा आमका पेड़ तैयार कर देता है। हमारे सुखके लिये उसने चाँद-सूरज बनाये हैं। हमारे सुखके लिये उसने गायोंमें दूध भरकर रख दिया है। हमारे सुखके लिये उसने हमें बुद्धि दी है। हमारे सुखके लिये उसने धरतीमें जल भर रक्खा है। हमारे सुखके लिये वह धानके एक दानेसे हजारों दाने पैदा करनेवाला बड़ा पौधा बना देता है। हमारे सुखके लिये उसने सोना, चाँदी, लोहा

और कोयला वगैरह बनाया है। हमारे सुखके लिये उसने हजारों जातिके फल-फूल बनाये हैं और वही हमको जीवित रखता है। इसलिये हमें उसकी भक्ति करनी चाहिये।'

गुरुजीने कहा—'शाबास! तुम तो बहुत अच्छी तरह समझे हुए हो। आज इतनी बात याद रक्खो। इस बारेमें नयी बातें मैं तुमको कल बताऊँगा।'



# ८—भक्ति

इसके बाद दूसरे दिन धर्मका ज्ञान देते समय गुरुजीने लड़कोंसे कहा—'हमें किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करनी चाहिये। हम क्या करें जिससे ईश्वर प्रसन्न हो ?'

एकने कहा—'हमारे धर्म-पालन करनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

इसके बाद गुरुजीने दूसरे लड़केकी ओर देखा तो उसने कहा—'मा-बापका कहना माननेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

तीसरेने कहा—'भगवान्‌की आज्ञा माननेसे वह प्रसन्न होता है।'

चौथेने कहा—'उसके ऊपर विश्वास रखनेसे वह प्रसन्न होता है।'

पाँचवेंने कहा—'ईश्वरका नाम बार-बार याद किया करें और उसका उपकार माना करें तो ईश्वर प्रसन्न होता है।'

छठेने कहा–'वह जैसे रक्खे वैसे ही रहनेसे प्रसन्न होता।'

सातवेंने कहा–'ईश्वरके प्रति प्रेम रखनेसे वह प्रसन्न होता है।'

आठवेंने कहा–'ईश्वरसे डरकर चलनेसे वह प्रसन्न होता है।'

नवेंने कहा–'खूब पढ़नेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

दसवेंने कहा–'गरीबोंपर दया करनेसे वह प्रसन्न होता है।'

ग्यारहवेंने कहा–'लोभ न करनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

बारहवेंने कहा–'क्रोध न करनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

तेरहवेंने कहा–'अभिमान न करनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

चौदहवेंने कहा–'किसीको भी दुःख न देनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।'

पन्द्रहवेंने कहा—‘नीतिके अनुसार चलनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।’

सोलहवेंने कहा—‘पाप न करनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।’

सतरहवेंने कहा—‘बुरी बात न बोलो, चोरी मत करो, मार-पीट न करो, किसीको गाली मत दो, किसीकी निन्दा न करो, किसीसे डाह मत करो और किसीको दुःख न दो तो ईश्वर प्रसन्न होता है।’

अठारहवेंने कहा—‘सबकी भूल माफ करें और किसीसे वैर न करें तो ईश्वर प्रसन्न होता है।’

उन्नीसवेंने कहा—‘लोगोंका भला करनेसे ईश्वर प्रसन्न होता है।’

बीसवेंने कहा—‘ईश्वरकी प्रार्थना करनेसे वह प्रसन्न होता है। इसलिये हर रोज सबेरे उठते समय उसका नाम याद करके तथा उसका उपकार मानकर उसकी प्रार्थना करनी चाहिये।’

यह सुनकर उन लड़कोंसे गुरुजीने कहा—‘तुम सभीकी बातें सच्ची हैं, पर तुम सब अभी ईश्वरके

विषयमें सिर्फ एक-एक, दो-दो बातें ही जानते हो। धीरे-धीरे सारी ही बातें तुम्हें जाननी चाहिये। अब छुट्टीका समय हो गया है, इसलिये आओ, हम पाँच मिनट ईश्वरकी प्रार्थना कर लें। इसे तुम ध्यान रखकर सुनना और जब तुम्हारे मनमें ईश्वरके विषयमें उमंग आये, तभी इन प्रार्थनाओंको करते रहना।' ऐसा कहकर हाथ जोड़कर, सिर नवाकर गुरुजी कहने लगे–

'हे ईश्वर! तुम्हीं एक सत्य हो। हमें तुम्हीं बनानेवाले हो। हमारा पालन-पोषण करनेवाले तुम हो। हमको बुद्धि देनेवाले तुम हो। हमको तारनेवाले तुम हो और हमारे सच्चे सगे भी तुम्हीं हो। हे प्रभु! तुम्हारी शक्ति अपार है, तुम्हारा ज्ञान अनन्त है और तुम्हारी गतिका कोई पार नहीं पा सकता।

'हे प्रभु! तुम बूढ़े नहीं होते, तुम जन्म नहीं लेते, तुम्हारा नाश नहीं होता। तुम सदा अमर रहनेवाले हो। तुम देवताओंको भी बनानेवाले हो। जब कुछ न था, तब भी तुम थे और जब कुछ न रहेगा, तब भी तुम रहोगे।'

'हे प्रभु ! बिना आँखके तुम सारे जगत्को देख सकते हो। बिना कानके तुम सारे जगत्की सारी बातें सुन सकते हो। हाथ न होनेपर भी तुम सबको पकड़ सकते हो और पैर न होनेपर भी तुम पृथ्वी, पाताल और आकाशमें भी जा सकते हो। तुम बड़े-से-बड़े हो और छोटे-से-छोटे हो। तुम दूरसे भी दूर हो और पाससे भी पास हो।'

'हे प्रभु ! तुम हमारे आगे भी हो और पीछे भी हो। तुम हमारे अन्दर भी हो और बाहर भी हो। हमारे ऊपर भी हो और नीचे भी हो। तुम सब जगह हो। हे प्रभु ! ऐसी कोई भी जगह नहीं, जहाँ तुम न हो।'

'पहाड़के शिखरके ऊपर भी तुम हो और समुद्र के तलमें भी तुम हो। उजाड़ जंगलमें भी तुम हो। अँधेरी गुफामें भी तुम हो और हमारे भीतर भी तुम हो।

'हे ईश्वर ! तुम्हारी आज्ञासे सूरज उजाला देता है, तुम्हारी आज्ञासे बादल बरसता है, तुम्हारी आज्ञासे पवन चलता है, तुम्हारी आज्ञासे समुद्रमें

ज्वार-भाटा होता है और तुम्हारी आज्ञासे जाड़ा, गर्मी और बरसात आती है और जाती है ।'

'हे प्रभु ! अग्निमें जो गर्मी है, वह तुम्हारी दी हुई है; जलमें जो ठण्डक है, वह तुम्हारी दी हुई है; सूरजमें जो तेज है, वह तुम्हारा दिया हुआ है; चन्द्रमामें जो शान्ति है, वह तुम्हारी दी हुई है; बिजलीमें जो चमक है, वह तुम्हारी दी हुई है; पवनमें जो बल है, वह तुम्हारा दिया हुआ है; फूलमें जो सुगन्ध है, वह तुम्हारी दी हुई है और फलोंमें जो मिठास है, वह तुम्हारी ही दी हुई है ।'

'हे ईश्वर ! बलवान्‌को बल और बुद्धिमान्‌को बुद्धि तुम्हींने दी है । धनवान्‌को धन, रूपवान्‌को रूप, गुणवान्‌को गुण और ज्ञानवान्‌को ज्ञान भी तुम्हींने दिया है ।'

'हे प्रभु ! तुमने हमको सुननेके लिये कान दिये हैं, देखनेके लिये आँखें और बोलनेके लिये जीभ दी है और विचार करनेके लिये बुद्धि दी है—यह तुम्हारा उपकार थोड़ा नहीं है ।'

'हे प्रभु ! तुम्हारा सूरज हमको उजाला देता है, तुम्हारी नदियाँ पानी देती हैं और जमीन खानेके लिये अनाज देती है। यह सब तुम्हारा बहुत बड़ा उपकार है।'

'हे प्रभु ! कोई आदमी चाहे कभी आकाशके तारे गिन सके, सिरके बाल गिन सके, बालूके कण गिन सके, समुद्रकी लहरें गिन सके और कदाचित् वर्षाकी बूँदोंको भी गिन सके तो गिन सकता है; परन्तु हे ईश्वर ! तुम्हारे गुण और तुम्हारे उपकार कभी किसीसे गिने नहीं जा सकते।'

यों कहकर गुरुजीने हाथ जोड़कर सिर नवाया। सब लड़कोंने भी वैसा ही किया। इसके बाद 'शान्तिः शान्तिः शान्तिः' कहकर सबने छुट्टी पायी।

# ७–बालकोंके अच्छे काम

इसके बाद दूसरे दिन विद्यालयसे छुट्टी मिलनेके बाद मणिशंकरके साथ बहुत-से लड़के बुद्धिनाथके यहाँ गये और पूछने लगे कि आजके पाठमें नयी बात क्या है ?

बुद्धिनाथने कहा–'आजका पाठ तो बहुत ही बढ़िया है; क्योंकि इसमें यह समझाया है कि छोटे लड़के अच्छा काम कैसे कर सकते हैं ?'

यह सुनकर वहाँ बैठी हुई बुद्धिनाथकी दादी हँस पड़ी और बोल उठी–'लड़कोंको तो धमा-चौकड़ी करना आता है, उनको अच्छे काम करना कहाँसे आयेगा; ये बेचारे इतनी छोटी उम्रमें अच्छा काम क्या समझेंगे ? मैं इतनी बूढ़ी हो गयी तब भी मुझे अभी अच्छे काम करने नहीं आते, फिर ये कलके तिकड़ूजी क्या अच्छा काम कैसे कर सकेंगे ?' यह सुनकर बुद्धिनाथने कहा–

लड़के तो बहुतेरे अच्छे काम कर सकते हैं। यह जानना हो तो इस पाठको सुनो।'

तब उनको दादीने कहा–'बाँच भाई! बाँच।'

इससे वहाँ गलीमें एक औसारमें सब बैठ गये और बुद्धिनाथ पाठ पढ़ने लगा। हमारे देशमें कुछ वर्षों पहले स्वामी विवेकानन्द नामके एक बड़े उहात्मा हो गये हैं। उनके सद्‌गुण, उनका ज्ञान और उनकी परोपकार-वृत्ति देखकर योरोप तथा अमेरिकामें भी अनेकों स्त्री-पुरुष उनके शिष्य बनकर हिन्दूधर्मका पालन करने लगे थे। उनमेंसे एक बहिनने तो अपना नाम भी हिन्दू 'निवेदिता बहिन' रख लिया था। बंगालमें इस बहिनने गरीबोंकी बड़ी सेवा की है। वह गरीबोंके मुहल्लोंमें चली जाती और हाथसे बजानेवाला बड़ा बाजा बजाने लगती। बाजा सुननेके लिये बहुत लड़के इकट्ठे हो जाते, तब वह बहिन उनसे कहती–

'मेरे प्यारे लड़को! यहाँ आओ। मैं तुमको खानेको दूँगी और मजेकी बातें सुनाऊँगी। जो

लड़के आधा घण्टा मेरी बातें सुनेंगे, उन सबको मैं एक-एक सेव दूँगी और जो इन बातोंको याद रखकर फिरसे मुझे कह सुनायेगा, उसे यह 'सुनहला उपदेश' -नाम की पोथी इनाम दूँगी।' इस कारण बहुत-से लड़के उस भली बहिनकी बातें सुननेके लिये वहाँ खड़े रहते। उनके सामने वह बहिन कहती–

हम भले बनें तो भगवान् प्रसन्न होता है। हम भले बनें तो हम जो चाहते हैं वह मिल जाता है। हम भले बनें तो हमारे मा-बाप प्रसन्न होते हैं। हम भले बनें तो हमारे शिक्षक हमपर कृपा रखते हैं। हम भले बनें तो हमपर हमारे मित्र बहुत प्रेम रखते हैं। हम भले बनें तो हमारी इज्जत बढ़ती है। हम भले बनें तो हमें बहुत सुख मिलता है। इसलिये हमें भला बनना चाहिये। फिर भला बननेके लिये हमको भले विचार रखने और अच्छी बातें करनेके साथ-साथ अच्छे काम भी करने चाहिये। तुम अभी छोटे हो तो तुम्हें इस समय छोटे-छोटे ही भलाईके काम करने चाहिये;

क्योंकि यदि तुम्हें अभी छोटा-छोटा अच्छा काम करना आ जायगा तो जब तुम बड़े होओगे, तब भलाईके बड़े-बड़े काम भी कर सकोगे।

किसी लड़केकी पेन्सिल खो जाय और तुम्हारे पास अधिक हों अथवा उस समय पेन्सिलकी तुम्हें जरूरत न हो तो तुम्हें चाहिये कि तुम्हारी वह पेन्सिल तुम उसे लिखनेके लिये दो। किसी लड़के की स्याहीकी दावात ढुल गयी हो अथवा किसी कारणवश कोई लड़का अपनी दावात विद्यालय न ला सका हो तो तुम्हें चाहिये कि अपनी दावातमें उसे लिखने दो। किसी कारणसे तुम्हारे दर्जेका कोई लड़का कभी विद्यालय न जा सका हो और वह तुम्हें पूछे कि कौनसा पाठ चल रहा है, तो इस बारे में तुम्हें जो कुछ मालूम हो, उसे बता देना चाहिये। तुम्हारे पास पीने का पानी हो और किसी लड़केको प्यास लगी हो तो तुम्हें उसे पानी देना चाहिये। कोई लड़का भूल गया हो और तुम उसका घर या मुहल्ला जानते हो तो उसे बतानेकी भलाई तुम्हें करनी चाहिये।

तुम्हारे पड़ोसमें कोई अन्धा, लूला, बीमार या दुखी आदमी हो और वह तुमसे बन सकने लायक कोई सहज काम करनेको कहे तो तुम्हें उसे कर देना चाहिये । कोई भूखसे मरता हुआ कुत्ता तुम्हारे देखनेमें आवे तो अपनी मासे कहकर उसे रोटीका टुकड़ा डालना चाहिये । किसी गरीब लड़केके पास किताब न हो और वह किताब तुम्हारे पास पिछले दर्जेमें पढ़ लेनेपर बेकार पड़ी हो तो उसे उसको दे देना चाहिये ।

बोलो, मेरे प्यारे लड़को ! इस प्रकारके सहज-सहज अच्छे काम तुमसे हो सकते हैं या नहीं ?

यह सुनकर उनमेंसे बहुत-से लड़के बोल उठे- 'हाँ माँजी ! हमसे ऐसे अच्छे काम हो सकते हैं ।'

इसके बाद दूसरोंका भला करनेवाली वह दयालु बहिन बोली--'अगले रविवारको इसी समय मैं फिर आऊँगी । उस समय जो लड़का इन बातोंको मुझसे दुबारा कह सुनायेगा, उसे यह 'सुनहली शिक्षा' नामकी पुस्तक इनाम दूँगी

और जो लड़के इस एक सप्ताहमें अपने किये हुए अच्छे कामोंको कह सुनायेंगे, उनको एक रूमाल भेंट करूँगी। जो लड़के उनमें सबसे अधिक अच्छे काम करनेवाले होंगे, उन्हें सुन्दर टोपी इनाम दूँगी और जिसको कोई भी इनाम नहीं मिलेगा, उसे भी एक-एक नारंगी दूँगी। इसलिये अगले रविवारको सब लड़के यहाँ जरूर आना। अब पाँतमें बैठ जाओ और एक-एक सेब लो।'

यों कहकर उस भली बहिनने सब लड़कोंको एक-एक सेव दे दिया और सबने उपकार मानकर ले लिया। इसके बाद उन लड़कोंकी तारीफ करके और बहुत प्रेमसे नमस्कार करके वह भली परोपकारी बहिन वहाँसे चली गयी।

पाठको सुनकर बुद्धिनाथकी दादीने कहा–'ओह! यह तो बहुत मजेकी बात है। ऐसी बातें तो लड़कोंको जरूर सीखनी चाहिये।'

फिर उसने कहा–'बहूरानी! आज बड़े भैया बहुत-सी ताजी रवेड़ी लाये थे। उन्हें ले आओ। इन लड़कोंने मुझे बड़ी मजेदार बात सुनायी है।

इसलिये हम इन्हें मीठी-मीठी ताजी खेड़ी खिलावें ।'

यह सुनकर बहूरानी खेड़ी लेने उठी । इतनेमें उनकी नन्हीं-सी पद्मिया चिल्ला उठी—'मैं अकेली ही सारी खेड़ी खाऊँगी । किसीको भी नहीं दूँगी ।' यों कहकर वह अपनी माँके पीछे-पीछे जानेके लिये खड़ी हो गयी ।

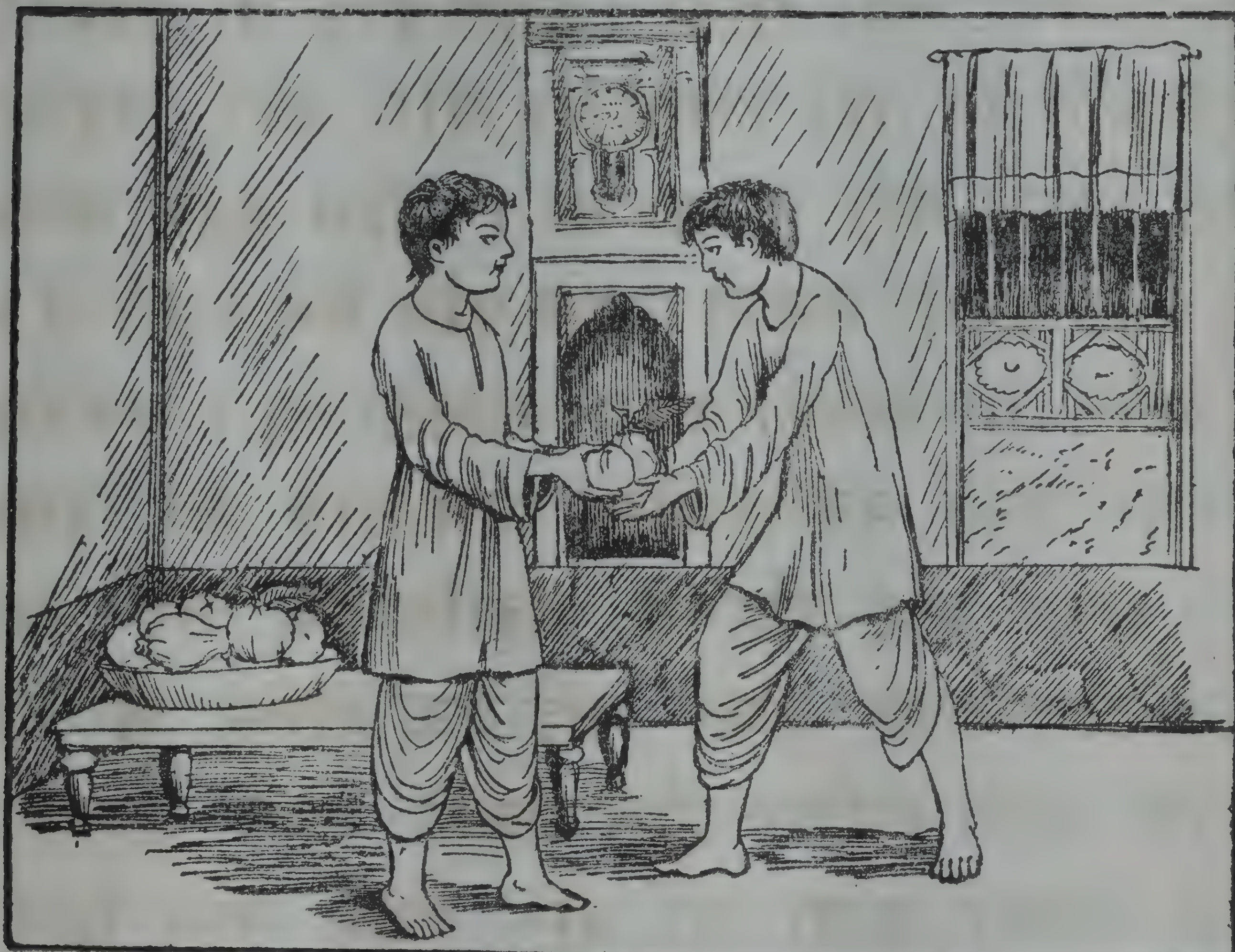
दादीने हाथ पकड़कर उसे रोक लिया और कहा—'अरी पगली लड़की ! तुझे कुछ पता भी है ? पहले सबका हिस्सा निकालकर तब हमें खाना चाहिये । यदि सब हम अकेले खा जायँगे तो हमको पाप लगेगा । मैं छोटी थी, तब मैं भी तेरी ही तरह थी । किसीको कुछ देने नहीं देती और अकेली सब खा जाती । इससे मैं रोज बीमार पड़ती और सबकी डाह करते रहनेसे मेरा मन जलता रहता और मेरी रोनी-सूरत बनी रहती । मुझे देखकर मेरा मामा कहता कि 'यह लड़की किसीको हिस्सा नहीं देती, सब अकेले खा जाती है । इसलिये यह जल्दी ही मर जायेगी और ठीक

ऐसा ही हुआ। एक दिन किसीको भी भाग न देकर मैंने खूब ठूँस-ठूँसकर खा लिया। इससे बहुत बीमार पड़ी और बिल्कुल मरनेके समीप पहुँच गयी। बड़ी कठिनाईसे बची भी तो बहुत दिनोंतक ऐसा रहा कि मुझे कोई चीज भाती ही नहीं थी। तभीसे मैंने दूसरोंका हिस्सा बाँटकर खाना सीखा! इसलिये बेटी! तुझको भी जल्दी ही मर जाना हो तब तो सब कुछ अकेली खाती रह और यदि जीना हो तो सबका हिस्सा बाँटकर पीछे अपना भाग खा।'

यह सुनकर बुद्धिनाथने कहा- 'ऐसा पाठ तो इसमें भी है दादी ?'

बुढ़िया बोली-'तेरी मा जबतक रेवड़ी लाती है, तबतक तो तेरी पद्मा बहिन यह पाठ बाँच लेगी। इसलिये पद्माको यह पाठ बता दे, वह बाँचे।'

बुद्धिनाथने पाठ निकालकर अपनी छोटी बहिन पद्माके हाथमें पोथी दे दी, तब पद्मा वह पाठ बाँचने लगी।



# ८—बाँटकर खाना

एक मुहल्लेमें दो लड़के रहते थे। एकका नाम था मोहन और दूसरेका सोहन। वे दोनों लड़के साथ खेलते और साथ पढ़ते; परन्तु उसका चाल-चलन अलग-अलग था। मोहन स्वार्थी था, वह किसीकी कभी मदद नहीं करता था। कभी कोई पड़ोसी यदि उससे कोई काम करनेके लिये कहता

तो वह नहीं करता और घरमें भी किसीके साथ हिल-मिलकर नहीं रहता । इससे कोई भी आदमी उसके प्रति प्रेम नहीं रखता था और कोई लड़का उससे दोस्ती नहीं करता था । सोहन बहुत भला था, इससे बहुतेरे मनुष्य उसके प्रति प्रेम रखते थे। वह अपने मा-बापका कहना मानता था । जरूरत पड़नेपर अपने पड़ोसियोंका काम-काज कर देता था । अपने भाई-बहिनमें, पड़ोसियोंके लड़के या अपने विद्यालयके अपने भाई-बन्धुओंमेंसे जो भी खानेके समय हाजिर होते सबको अपनी खानेकी चीजें बाँटकर खाता था और सबके साथ हिल-मिलकर रहता था। यों करनेसे वह भी जब किसी अपने भाई-बन्धुके घर जाता, तब उसको भी नयी-नयी चीजें खानेको मिलतीं । जिस कुटुम्बीके घर जाता, वही उसकी बड़ाई करता था और जिस किसी भी पड़ोसीके घर जाता, सब उसका सम्मान करते । वह सबके प्रति प्रेम रखता था और अपने भागमेंसे सबको हिस्सा बाँट देता था । इससे उसको भी रोज-रोज नयी-नयी चीजें खानेको मिलती थीं । जैसे सोहनके घर धानी सेंकी जाती

तो उसे वह अपने पड़ोसी लड़कोंको देता था। इसी प्रकार एक पड़ोसी लड़केने आज उसे ईखकी गँडेरी दी। दूसरे दिन पड़ोसीके दूसरे लड़केने उसे बढ़िया चिउरे दिये। तीसरे दिन तीसरे लड़केने उसे किशमिश दी। चौथे दिन उसकी छोटी बहिन अपने मामाके यहाँ गयी थी, वहाँ उसको बरफी खानेको दी गयी थी, उसमें से वह अपने सोहन भाईके लिये बरफी लेती आयी। एक मित्रके यहाँ उसके बागीचेके अमरूद आये थे, वह अपने सोहन भैयाके लिये अमरूद ले आया। सोहन अपनी चचेरी बहन-को खेलाया करता था, इससे काकी उसके लिये कुछ-न-कुछ अच्छी खानेकी चीज रक्खे रहती थी। इस प्रकार सोहन अपनी धानीमें से दूसरे लड़कोंको हिस्सा देकर उसके बदलेमें बहुत बार बहुत-सी नयी-नयी चीजें खानेको पाता था। फिर, वे सभी उसके प्रति बड़ा प्रेम रखते थे। इसलिये यदि कभी किसी दिन उसके पास किताबें न होतीं या किसी दिन पेन्सिल, स्याही या कागज न होता तो उसे परेशान नहीं होना पड़ता। उसे अपने मित्रोंसे ये

सारी चीजें मिल जातीं। इतना ही नहीं, यदि कभी कोई खराब लड़का सोहनको मारने आता तो सब लड़के सोहनकी मदद करते। इससे कोई उसे मार नहीं सकता था। वह अपने मित्र-बन्धुओंपर बहुत प्रेम रखता था और अपने खानेकी वस्तुओं-मेंसे उनको बाँट देता था। इससे सब लड़के और उनके मा-बाप उसके प्रति बहुत प्रेम रखते थे।

भला सोहन जब इस प्रकार मजेसे रहता था, तब किसीको भी हिस्सा न देनेवाले और अकेले सब खा जानेवाले मोहनकी क्या हालत थी, यह तुम जानते हो ? सोहनको जिस प्रकार सब ओर से अच्छा-अच्छा खाने-पीनेके लिये मिलता था, उस तरह मोहनको नहीं मिलता था। मोहनकी कापी फट जाती तो कोई लड़का उसको अपनी कापी नहीं देता था और किताब न होती तो कोई उसको किताब बाँचनेके लिये नहीं देता। मोहनको कोई भूल होती तो कोई लड़का उसकी भूल नहीं बतलाता। इससे उसका आखिरी नम्बर रहता था।

एक दिन खेल-ही-खेलमें सोहनके पैरमें ठोकर

लग गयी, इससे उसके पैरकी अँगुलियोंसे खून निकल आया। तब उसके साथके ही उसीके-जैसे एक गरीब मित्रने अपने फटे हुए फेंटेमेंसे थोड़ा-सा टूकड़ा फाड़कर उसकी अँगुलियोंमें बाँध दिया और उसका हाथ पकड़कर उसके घर पहुँचा आया।

उसके बाद एक दिन मोहनके पैरमें कुत्तेने काट लिया और खून निकलने लगा, इससे वह रोने लगा। उस समय बहुत-से लड़के वहाँ थे, पर किसीने उसकी ओर ध्यान न दिया। उसने एक लड़केसे कहा—'शिवा ! मुझे मेरे घर पहुँचा दे।'

शिवा बोला—'एक दिन मेरी गेंद कुएँमें गिर गयी थी, उस समय तुम खेल रहे थे। मैंने खेलनेके लिये तुमसे गेंद माँगी थी, पर तुमने गेंद नहीं दी थी। यह बात याद है न ? तुम मेरी मदद नहीं करते हो, तो मैं किसलिये तुम्हारी मदद करूँ ?

यह सुनकर मोहनने कहा—'सोहनके पैरमें ठोकर लगी थी, तब तो तुमने फेंटा फाड़कर उसकी अँगुलियोंपर पट्टी बाँधी थी और उसका हाथ पकड़कर उसे घर पहुँचा दिया था। तुम्हारी यह

भलाई देखकर——और मेरा पैर बहुत दुखता है, मैं अकेला नहीं चल सकता, इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ ।'

शिवाने कहा–'अपनी खानेकी चीज होती है तो उसमेंसे भी सोहन मुझे दिया करता है । इसलिये उसकी खातिर करनी चाहिये, पर तुम तो स्वार्थी हो । तुम्हारी मदद हम लोग क्यों करें ?'।

यों बातें हो ही रहीं थीं कि इतनेमें वहाँ एक अनजान लड़का आया । वह मोहनके पैरसे खून निकलते देखकर और उसको रोते देखकर वहाँ खड़ा हो गया और दूसरे लड़केसे पूछने लगा-'इसको क्या हो गया है ?'

उस लड़केने बताया——'यह ऊधम करता था और कुत्तेकी पूँछ खींचता था, इससे कुत्तेने इसे काट लिया ।'

यह सुनकर उस अनजान लड़केने अपनी जेबमेंसे रूमाल निकाला और उसे फाड़कर मोहनके पैरमें पट्टी बाँध दी और उसका हाथ पकड़कर धीरे-धीरे उसको उसके घर पहुँचाने चला ।

यह देखकर शिवाने उस अनजान लड़केसे पूछा—'मोहन क्या तुम्हारा कोई सगा-सम्बन्धी है ?'

उस लड़केने कहा—'नहीं ।'

शिवाने पूछा—'तो यह तुम्हारा मित्र है या जान-पहचानका है ?'

उस लड़केने कहा—'यह मेरा दोस्त भी नहीं और मैं इसे पहचानता भी नहीं ।'

यह सुनकर शिवाने कहा—'तब तुमने किसलिये अपनी रूमाल फाड़कर इसके पैरमें पट्टी बाँधी ? और किसलिये इसके घरतक इसे पहुँचाने जाते हो ? इसको तुम इतनी अधिक खातिर करते हो । क्या इसने तुम्हारी मदद की है ?'

उस लड़केने कहा—'मेरे पिताने मुझे यह सिखलाया है कि जो अपनी भलाई करे, उसकी यदि हम भलाई करते हैं तो इसमें नयी बात क्या है? यह तो सभी करते हैं । ऐसा तो पशु भी करते हैं; जो आदमी उन्हें खानेके लिये देता है, उसकी वे ताबेदारी करते हैं । परन्तु हमें तो मनुष्य होनेके

कारण सबका भला चाहना चाहिये और किसी भी बदलेकी आशा किये बिना जहाँतक हो सके, मदद करनी चाहिये ।'

## हमको दूसरोंकी मददकी जरूरत है इसलिये भी हमें दूसरोंकी मदद करनी चाहिये

यह सुनकर मोहनके पास खड़े रहकर भी उसकी मदद न करनेवाले सभी लड़के शरमा गये। फिर भी उसमेंसे एक लड़केने कहा—'मोहन स्वार्थी है, वह किसीका काम नहीं करता। इसलिये हम भी उसकी मदद नहीं करते। एक दिन हम तालाबमें नहाने गये थे, मेरे पैरमें काँटा गड़ गया। मैंने मोहनसे कहा—'मैं जबतक पैरमेंसे काँटा निकालता हूँ, तबतक तुम बैठो, फिर हम दोनों साथ चलेंगे।' पर वह नहीं रुका और मुझे अकेला छोड़कर चला गया। इस तरह यह कभी किसीका काम नहीं करता, तब हम क्यों उसका काम करें ?'

यह सुनकर उस भले लड़केने मोहनसे कहा—

'भाई ! हमको बार-बार सबसे काम पड़ता है, इसलिये हमको भी अपनेसे जहाँतक हो सके, सबकी मदद करनी चाहिये। आज क्या तुम्हें खबर थी कि तुम्हें मेरी मददकी जरूरत पड़ेगी ? इस प्रकार अनचिन्ते हम लोगोंको बहुत-से आदमियों और बहुत-सी वस्तुओंकी जरूरत पड़ती है। फिर यदि हम किसीसे प्रेम न रक्खें और किसीकी मदद न करें तो जरूरत पड़नेपर हमारी भी कोई मदद न करेगा। इसलिये तुम्हें सबके साथ भलाई करनी चाहिये। नहीं तो किसी दिन भटककर मरना पड़ेगा।' यह सुनकर और यह देखकर कि अपने पैरमें कुत्तेने काट लिया और उसपर एक अनजान लड़केने बिना किसी स्वार्थके मदद की, मोहनके ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने देख लिया कि अपनेको दूसरोंकी मददकी कितनी जरूरत है। उसने कहा कि 'अब मैं सबपर प्रेम रखूँगा और मुझसे जो हो सकेगी, मदद करूँगा।' इसके बाद सब लड़के बातें करते-करते मोहनके घर पहुँचे।

# ९-डरना नहीं

चन्दूलालने कहा–मानिकचन्द ! अब परीक्षा समीप आ गयी है, इसलिये मेरे घर आओ तो हम रातको साथ-साथ पाठ याद किया करें ।

मानिकचन्द बोला–'मैं रातको तुम्हारे घर नहीं आ सकता ।'

चन्दूलालने कहा–'क्यों इसमें क्या अड़चन है ?'

मानिकचन्द बोला–'रातको बाहर निकलनेमें मैं डरता हूँ ।'

यह सुनकर चन्दूलाल हँस पड़ा और बोल उठा–'अरे डरपोक ! भला, इसमें डर काहेका ? अपना घर तो एक ही मुहल्लेमें और पास-पास है । क्या तुझे इतनेमें ही डर लग जाता है ? ऐसी डरपोक तो लड़कियाँ भी नहीं होती हैं ।'

यह सुनकर मानिकचन्दके बड़े भाई प्रभुदासने कहा–'अरे ! यह तो ऐसा डरपोक है कि बात न पूछो । हमारे घरमें एक कमरेसे दूसरे कमरेमें भी

जानेसे डरता है। बिस्तरपर अकेला सोनेमें भी डरता है। दीपक बुझ जाता है तो डरता है। सिपाहीको देखता है तो डरता है। किसी साधुको देखता है तो डरता है। कुत्ता भूँकता है तो डरता है। घरमें अकेला रहता है तो डरता है। चावलमेंसे इल्ली निकलती है तो उसे देखकर डरता है। फतिंगेसे डरता है। बन्दूककी आवाज सुनता है तो डरता है। तालाब या नदीमें नहाते डरता है। नावमें बैठनेपर डरता है। अपनी परछाईंसे डरता है और चुहियाके बच्चेसे भी डरता है। ऐसा डरपोक तो कोई नहीं होगा।'

यह सुनकर सेवकलालने कहा—'यह तो बड़ी ही खराब बात है। इसे नालायकी कहेंगे। अरे मानिकचन्द ! तू ऐसा कायर है। ऐसा डरपोक रहेगा तो आगे बड़े काम कैसे कर सकेगा ?'

मानिकचन्दने कहा—'डरना अच्छा नहीं, यह तो मैं जानता हूँ और अपने भयको मैं दूर करना भी चाहता हूँ; पर न जाने क्यों मुझे जरा भी हिम्मत नहीं आती और बिना कारण डरा करता हूँ।'

यह सुनकर चन्दूलालने कहा—'पर तुम डरते किससे हो, यह मैं नहीं समझता; क्योंकि चूहा बड़ा है कि तुम बड़े हो ? फतिंगेमें ज्यादा बल है कि तुममें ? और इल्लीमें अधिक अक्ल है कि तुममें ? तुम्हारे बाप, काका, भाई, मामा या दोस्त जो तुम्हें तालाबमें नहानेके लिये साथ ले जाते हैं तो क्या वे तुमको पानीमें डुबो देंगे ? कभी नहीं। फिर तुम क्यों डरते हो ? हमारे मा-बाप, पड़ोसी आदि बहुत लोग हमारी मददमें हैं, फिर कुछ भी अपराध किये बिना सिर्फ सिपाहीका नाम सुनकर ही अथवा किसी साधुबाबाको देखकर हम क्यों डरें ? दीपक यदि बुझ गया तो क्या हो गया ? अँधेरा तो ऐसी चीज नहीं है जो हमें खा जायेगा और तुम्हारे बिस्तरेसे कौन-सा हौवा निकल पड़ेगा, जरा बताओ तो ? ऐसे डरपोक क्यों बनते हो ? लड़कोंको तो खूब हिम्मत रखनी चाहिये।'

यह सुनकर मानिकचन्दने कहा—'ये सारी बातें सच्ची हैं। पर मेरी माने मुझको बचपनमें बहुत डरा दिया था। इस कारण मुझमें हिम्मत आ ही

नहीं सकती । मा बात-बातमें कहा करती–'देख, बाबा आया । ऊधम मचायेगा तो सिपाहीको बुलाऊँगी । उस मुहल्लेमें भूत घूमता है, इसलिये वहाँ खेलने न जाना । अँधेरेमें जायगा तो बिच्छू डंक मार देगा । अकेला बाहर जायगा तो कोई तुझे उठा ले जायगा । रो मत, नहीं तो चूहेके बच्चोंके पास डाल आऊँगी ।' इस प्रकार बात-बातमें मेरी मा डराया करती । इसीसे मैं डरपोक बन गया हूँ ।'

यह सुनकर श्यामलालने कहा–'अरे ! तुम्हारी मा तुम्हें इस तरह डराती है–यह तो बड़ी बुरी बात है । मैं यदि किसी बातसे डरता हूँ तो मेरी मा कहती है–'तू ऐसा कहाँसे पैदा हो गया ? हमारे परिवारमें तो कोई तेरे-जैसा कायर नहीं है ।' पहले मैं घोड़ेपर बैठनेमें डरता था, यह देखकर मेरे बाप मुझसे कहते––'घोड़ेपर बैठनेमें डरता है तो सरदारी कैसे कर सकेगा ? बतला, तू नाई बनेगा या सरदार ? यदि बहादुर होना हो और सरदारी करनी हो तो घोड़ेपर बैठनेमें मत डरो । हमारा राम भैया तो तुमसे छोटा है, फिर भी कैसी

सफाईसे घोड़ा दौड़ाता है ? और एक तू है जो घोड़ेपर चढ़नेमें डरता है ? हाय, हाय, तेरी तो इज्जत गयी । हम तो सबके आगे तेरी तारीफ किया करते हैं कि हमारा श्यामलाल बड़ा बहादुर है । पर अब तो ऐसा कहना पड़ेगा कि श्यामलाल तो कायर है । बोल तुझे क्या पसन्द है ? बहादुर होनेका मन है कि कायर रहना अच्छा लगता है ?' यह सुनकर मैं शरमा जाता और मनमें डरनेपर भी बाहरसे हिम्मत रखकर घोड़ेपर जा बैठता । इसीसे मैं आज अच्छी तरह घोड़ा दौड़ा सकता हूँ ।

इसी प्रकार जब मैं पटाका चलाते डरता था या बन्दूककी आवाज सुनकर डरता, तब भी मेरे पिताजी कहते—'बेटा ! तू तो पटाकोंसे डरता है, पर क्या तुझे खबर है कि हमलोगोंको जो यह जमींदारी मिली है, वह बाप-दादोंकी बहादुरीसे मिली है ? वे पेशवा सरकारकी नौकरीमें सरदार थे और उन्होंने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीती थीं । उसके बाद मेरे दादा अंग्रेज सरकारकी पल्टनमें रहे और अफगानकी लड़ाईमें घायल हो गये ।

इससे जबतक जीते रहे पेंशन मिली। चालीस वर्ष बाद अपने गाँवमें डाका पड़ा तो मेरे पिताजीने डाकुओंको मार भगाया था। बेटा! अपने कुलमें कोई नामर्द आदमी नहीं हुआ, इसलिये बहादुर तुझे भी होना चाहिये।' इस प्रकार समझा-बुझाकर और हँसा-खेलाकर वे मेरे डरको छुड़ाते थे। इसलिये मैं अब किसीसे नहीं डरता। समझदार मा-बापको इस तरह युक्तियोंसे अपने लड़कोंके मनसे कायरताको मिटा देना चाहिये। इसके बदलेमें तुम्हारी मा बात-बातमें तुमको डराया करती है, यह तो बहुत ही बुरी बात है, पर अब तुम समझकर भी क्यों डरते हो?'

यह सुनकर हुसेन खाँने कहा—'तुम्हारी तरह और मानिकचन्दकी तरह मैं भी पहले बहुत डरता था। पर तुम्हारे बापकी तरह मेरे काकाने भी मुझे समझा-समझाकर मेरे डरको दूर कर दिया। मेरे गाँवके पास नदी बहती थी, वहाँ मेरे काका मुझको रोज नहानेके लिये ले जाते थे, पर मैं पानी देखकर बहुत डरता था और रो पड़ता था। उस

समय मेरे काका मुझको बहुत समझाते और कहते–'जो अच्छी तरह नहा लेगा तो तुझे पैसेकी जलेबी दिलाऊँगा !' फिर भी मैं नहीं मानता और रोया करता था। पर वे मेरे रोनेकी परवा नहीं करते। मैं रोता रहता, फिर भी मुझे उठाकर नदीमें ले जाते और कहते कि जिसे तैरना न आवे वह लड़का किस कामका ? हमें दिनरात पानीके साथ काम पड़ता है, और पानीसे डरेंगे तो कैसे काम चलेगा ? हमारे बाप-दादा नाव चलानेका काम करते थे। मेरे दादा एक बडे जंगी जहाजमें कप्तान थे। तुम्हारे बापने अनेक बार समुद्रमें डूबते हुए आदमियोंको बचाया था और मैंने भी तैरनेकी बाजीमें इनाम पाये हैं। ऐसी हालतमें तू पानीसे डरेगा तो कसे काम चलेगा ! तू रोता है तो इससे मैं तुझे छोड़ नहीं दूँगा। तुझे तो तैरना सीखना ही होगा।' इस-इस तरहसे वे मुझको समझाते, खानेको देते और अपने साथ मुझे पांनीमें ले जाकर मेरा डर दूर करते। इसीसे अब मुझे अच्छी तरह तैरना आता है और मैं दोस्तोंको भी तैरना सिखाता हूँ।'

यह सुनकर फतेहसिंहने कहा—'मेरे बड़े भाईको प्राचीन इतिहास पढ़नेका बड़ा शौक है और वे उसकी बातें मेरी भाभीको समझाया करते हैं। उनमेंसे कभी-कभी कुछ-कुछ मैं भी सुन लेता हूँ। एक दिन उन्होंने कहा था कि प्राचीन कालमें एक देशमें ऐसा कड़ा नियम था कि जो लड़का शरीरसे बलवान् और बहादुर नहीं होता था उसे मार डालते थे; क्योंकि ऐसा डरपोक और रोगी लड़का न तो अपना भला कर सकता है और न देशका ही। वह तो उल्टे दूसरे अच्छे लोगोंके ऊपर भार-सा हो जाता है। इसलिये ऐसे बेकार आदमी जीवित रहकर दूसरोंको हैरान करते हैं, इससे तो वे मर जायँ तो अच्छा। इसे देखकर दूसरा कोई नामर्द नहीं रहेगा। ऐसा विचार कर उन लोगोंने ऐसा कानून बना दिया था कि अपने देशके जितने लड़के जन्म लें उन सभी लड़कोंकी जाँचके लिये राजा और प्रजाकी ओरसे एक कमेटी बनायी जाय। वह कमेटी जिन लड़कोंको पास करे, उन्हें जिलाया जाय और जिन्हें पास न करे उन्हें मार डाला जाय। फिर बचे हुए लड़कोंमेंसे कोई

आगे चलकर डरपोक न बनें, विलासी न हों, बल्कि
सुख-दुःखको सह सकें और ऐसे बहादुर बनें कि
अपने देशकी भलाईके लिये शत्रुके सामने लड़ सकें
और अपना सिर दे सकें—इसके लिये उनको खूब
कसरत कराते, पहाड़ोंपर चढ़ाते, उजाड़
जंगलोंमें अकेले भेज देते, भूखे रखते, शीत-घाम
सहाते, हथियार चलना सिखाते, मा-बापसे अलग
गुरुके आश्रममें रखते और उनको ईश्वरके सिवा
दूसरे किसीसे न डरनेवाला बनाते थे। ऐसा करने-
से वे लोग बहुत सुखी और स्वतन्त्र थे और कोई
भी विदेशी उनके देशको जीत नहीं सकता था।
हमलोगोंको भी यदि सुखी होना है और अपने
देशका भला करना है तो ऐसा ही बहादुर बनना
चाहिये।'

यह सुनकर चन्दूलालने कहा—'अहा! यह तो
बहुत कड़ी बात है। अपने देशमें यदि ऐसा कानून
हो तो मानिकचन्द-जैसेके तो बारह ही बज जायें।'

श्यामलालने कहा—'इसमें अचरज क्या है?
डरपोकोंकी तो यही हालत होनी चाहिये।'

हुसैन खाँने कहा—'यदि मैं राजा होऊँ तो ऐसा कानून बनाये बिना न रहूँ ।'

फतेहसिंहने कहा—'इसमें राजा होनेकी क्या जरूरत है ? सारी दुनियाका डर जिसके घरमें घुस गया है, ऐसे मानिकचन्दकी मा-जैसी स्त्रियोंसे तो पूछो कि ऐसा कानून उनको पसन्द होगा ?'

इस प्रकार बात चल ही रही थी कि इतनेमें मुन्ना खूब रोने लगा। इसपर चन्दूलालने पूछा—'यह गड़बड़ कैसी ? वह क्यों रोता है ?'

तब मुन्नाका बड़ा भाई बोला—'मेरी मौसीके लड़के हरिलालने प्रेमसे इसको बुलाया और कहा, 'मुन्ना ! कैसे हो ? चलो, तुमको अनार खानेके लिये दूँ ।' इतना कहकर उसने इसका हाथ पकड़ लिया, इसीसे यह रोने लगा ।'

फतेहसिंहने कहा—'कोई प्रेमसे बुलावे, यह तो खुशीकी बात है । इसमें रोना किसलिये ?'

मुन्नाका बड़ा भाई बोला—'अरे ! यह तो ऐसा मुर्दा है कि बस, बात-बातमें रो देता है ।'

यह सुनकर चन्दूलालने कहा---'यह तो बहुत ह
बुरी बात है, जो नालायक लड़के होते हैं, वह
रोते हैं, अच्छे लड़के कभी नहीं रोते।'

बुद्धिनाथ बोले--'इस पोथीमें रोनी सूरतक
लड़कोंके विषयमें एक पाठ है, इसे बाँचा है ?'

फतेहसिंहने कहा---'ना, यह पाठ तो जरू
हमको सुनाओ।' फिर बुद्धिनाथने पाठ बाँचन
शुरू किया।





# १०–रोनी सूरतवाली लड़की

प्यारी नामकी छः वर्षकी एक लड़की थी। वह बात-बातमें रोया करती। कोई लड़का उसको खेलनेके लिये ले जानेको हाथ पकड़ता तो भी वह रो पड़ती। उसकी सखी-सहेली कहती–'प्यारी!

ले यह खानेको देती हूँ।' इसपर भी वह रो
पड़ती। कोई अनजान आदमी उसकी ओर देखता
तब भी वह रो पड़ती थी। अपनी मासे खान
माँगते-माँगते भी वह रोने लगती। किसी सगे-
सम्बन्धीके घर किसी कामसे जाना पड़ता तो भी
वह रोने लगती, कपड़ा पहनते वक्त, नहाते समय
कंघीसे केश सँवारते समय और विद्यालय जाते
वक्त भी वह रोती थी। इस कारण मुहल्लेके
तमाम लड़के उसको 'रोनी सूरतवाली' कहकर
चिढ़ाया करते थे। ईख, बेर, अमरूद, चना आदि
खानेके लिये उसको कोई नहीं देता और उसके
आगे जो खानेकी वस्तु रहती, उसे भी उसको रोते
रहनेके कारण दूसरा कोई खा जाता था या वह
वस्तु फेंकी जाती, गिर जाती या खो जाती थी।
इससे उसका मूँह उदास हो जाता था। उसके सिरके
बाल बिखर जाते, उसके कपड़े मैले हो जाते, उसके
गालोंपर सूखे हुए आँसुओंकी धाराएँ दीख पड़तीं,
बार-बार रोनेसे उसकी नाक बहने लगती और
मुँहसे लार टपकती रहती। बहुत रोनेसे वह साँस
भर जाती, घबरा जाती और खों-खों करने

लगती। इससे किसीको भी वह अच्छी नहीं लगती थी। सबको अप्रिय भुतनी-जैसी लगती थी। यह खराबी उसके खूब रोनेके कारण ही आती थी।

उस रोनी सूरतवालीकी दूसरी बहिनका नाम आनन्दी था। वह आठ वर्षकी थी और प्यारीसे जरा साँवली थी, फिर भी उससे अधिक शोभती थी; क्योंकि आनन्दी सचमुच आनन्दी ही थी। खेलमें कभी चोट लगती, कोई आदमी उसे चिढ़ाता, कोई बहन मजाकमें उसे चपत लगा देती, उसकी बाल सँवारनेवाली कंघी छिपा देती, उसकी पेन्सिलकी नोक तोड़ डालती, फिर भी वह रोती नहीं थी। दो-चार दिन कभी-कभी मासे अलग रहना पड़ता और घरमें दूसरोंके साथ रहना पड़ता तो भी वह रोती नहीं थी। वह अपनी खुशीसे देह मल-मलकर नहाती थी। हमेशा अपने हाथसे अपने सिरमें कंघी करती थी। कोई उसे प्यारसे बुलाता तो प्रसन्न होती थी। कोई पूछता तो उसे बहुत अच्छा उत्तर देती और कहीं आना-जाना

पड़ता तो खुश होती थी। वह विद्यालय भी खुशीसे जाती और ध्यान देकर पाठ बाँचती और सबसे पहले नम्बरमें आती थी।

## आनन्दी स्वभाव रखनेमें लाभ

आनन्दीका ऐसा आनन्दी स्वभाव होनेके कारण सब जगह उसको आनन्द मिलता था। घरमें भी वह आनन्दसे रह सकती, विद्यालयमें भी उसका नम्बर पहला रहता। इसलिये वहाँ भी गुरुजी बहुत मानते थे और उसे दूसरी लड़कियोंके ऊपर रखते थे। पड़ोसी लोग उसका उदाहरण देते थे और पड़ोसकी स्त्रियाँ अपनी लड़कियोंसे कहती थीं कि आनन्दीके जैसी बनो। सगे-सम्बन्धियोंके यहाँ जाती तो वहाँ भी उसकी प्रशंसा होती और मान मिलता। यह सब उसके आनन्दी स्वभावके कारण था, इसलिये हमें भी आनन्दी स्वाभाव रखना चाहिये।

आनन्दीको जहाँ सब जगहसे ऊपर लिखे अनुसार आनन्द मिलता था, वहाँ रोनी सूरतवाली

प्यारीकी सब हँसी करते थे और उसका अनादर करते थे। यही नहीं, प्यारीकी मा भी उसके रोनेसे ऊब जाती और कहती कि 'यह राँड़ मर जाती तो अच्छा होता।' यह सब किस कारण होता था ? प्यारीकी रोनी सूरतके ही कारण।

ऐ मेरे प्यारे लड़को ! बोलो, अब तुम्हें क्या पसन्द है ? आनन्दी-जैसा हँसमुख होना पसन्द है या प्यारी-जैसी रोनी सूरत होना ? यदि रोनी सूरत बनना नहीं चाहते हो, बिना किसी खास कारणके कभी भी मत रोओ और हमेशा आनन्दमें रहो।



# ११–स्वदेश-प्रेम (१)

इसके बाद जब दूसरे दिन छुट्टी थी, तब बहुतेरे लड़के बुद्धिनाथके घर गये। फिर बुद्धिनाथ पाठ पढ़ने लगा—

मास्टरने कहा—'शंकरप्रसाद ! 'स्वदेश'का क्या अर्थ है ?'

शंकरप्रसाद बोला—'महाशय ! स्वदेशका अर्थ है अपना देश।'

मास्टरने पूछा—'अनेकों देशोंमें अपना देश कौन ?'

शंकरप्रसादने कहा—'जिस देशमें अपना जन्म हुआ है और जिस देशमें प्राचीन कालसे अपने बाप-दादे रहते हों, वह अपना देश है।'

मास्टरने पूछा–'अपने देशके लिये हमें क्या करना चाहिये ?'

शंकरप्रसाद बोला–'हमें प्रेम रखना चाहिये।'

इसके बाद दूसरे लड़केके सामने जाकर मास्टर-ने कहा—'हीरालाल ! हमें देशके ऊपर प्रेम क्यों करना चाहिये ?

हीरालालने कहा—'अपने देशमें हमारा जन्म हुआ है। इसलिये हमको अपने देशपर प्रेम करना चाहिये।'

मास्टरने पूछा—'इसके अलावा दूसरा कोई कारण तुम जानते हो ?'

यह सुनकर हीरालाल विचारमें पड़ गया। मास्टरने तीसरे लड़केकी ओर देखा, इसलिये वह बोला—'अपने देशसे हमको खाना-पीना मिलता है, कपड़ा-लत्ता मिलता है और अपने देशकी हवा-पानीसे हम जीते हैं। इसलिये हमको अपने देशपर प्रेम रखना चाहिये।'

इसके बाद चौथे लड़केने कहा—'हमारे मृत बाप-दादोंके भले कामोंकी यादगारके स्थान अपने देशमें हैं और हम जब मरेंगे, तब हमारी देहके लिये अन्तिम जगह अपने देशमें ही मिलेगी। इतना ही नहीं, बल्कि अपने सगे-सम्बन्धी तथा अपने लड़के

और उनकी सन्तानका सुख भी अपने देशकी आबादीमें ही है इसलिये हमें अपने देशपर प्रेम रखना चाहिये ।'

यह सुनकर मास्टरने खुश होकर कहा—'शाबाश लालचन्द ! यह सारी बातें तुमने कहाँसे सीखीं ? तुम जो किताबें पढ़ते हो, उनमें तो ये सारी बातें स्पष्ट हैं नहीं ?'

लालचन्दने कहा—'मेरे काका समय-समयपर होनेवाली देशसम्बन्धी सभाओंमें जाया करते हैं, इससे वे बहुत-सी बातें जानते हैं और उनके साथ मैं भी घूमने जाया करता हूँ, तब वे मुझको ये बातें समझाया करते हैं ।'

मास्टरने कहा—'वाह-वाह ! बहुत खुशीकी बात है । जब इस प्रकार घरसे ही शिक्षा शुरू होगी, तभी हमारे देशका भला होगा । केवल स्कूली किताबोंसे कुछ नहीं बनता ।'

## हमारे बाप-दादोंका स्वदेश-प्रेम

मास्टरने कहा—'अपने देशपर प्रेम रखनेके बारे-

में इनके सिवा दूसरे किन्हीं कारणोंको तुम जानते हो ?'

शंकर प्रसादने कहा—'नहीं जी ! इससे अधिक मैं नहीं जानता ।'

मास्टरने कहा—'हमारे देशमें बड़े-बड़े ऋषि हो गये हैं और केवल लोगोंकी भलाईके लिये राज्य करनेवाले बड़े-बड़े सत्यवादी राजा हो गये हैं। ऐसे महान् और धार्मिक पुरुषोंके प्रतापसे ही हमको आज अपने प्राणोंकी अपेक्षा अपना धर्म अधिक प्रिय लगता है और जब हम छोटे रहते हैं, तभीसे बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों और भक्तोंके उपदेश हमारे कानोंमें पड़ने लगते हैं। इससे दूसरे देशोंके बहुतेरे स्वार्थी लोगोंके समान हम स्वार्थी नहीं बन जाते। इस पवित्र देशमें जन्म लेनेके इस प्रकारके अनेकों बड़े-बड़े लाभ हैं। इसीसे इस पवित्र देशके लिये हमारे बाप-दादोंके हृदयमें बड़ा मान-सम्मान था और वे प्रार्थना करते थे कि—'हे प्रभु ! हमको इस भारतखण्डमें ही सदा जन्म दीजिये।' जब उनको अपने देशके

प्रति इतना अधिक प्रेम था और जब वे अपने स्वार्थ और अपने सुखको छोड़कर जरूरत पड़नेपर अपना सिर भी अर्पण करते थे, तभी अपना देश सारी पृथ्वीमें सबसे अधिक आबाद और सुखी था। हमारा राज्य था और सारे जगत्‌में हमारी कीर्तिका गान होता था। इसलिये हमको भी अपने पूर्वजों और ऋषि-मुनियोंके समान अपने देशके प्रति प्रेम रखना चाहिये।

'प्राचीन कालमें हमारे बाप-दादोंके मनमें अपने देशके लिये इतनी अधिक लगन थी कि उसका आज हम विचार भी नहीं कर सकते। महाराणा प्रतापसिंह, गुरु गोविन्दसिंह और महाराज शिवाजीने स्वदेश-प्रेमके कारण इतने अधिक बड़े-बड़े त्याग किये हैं और इतनी अधिक जोखिम उठायी है कि उनको पढ़कर और सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं; परन्तु इन सारी बातोंको तुम इस समय ठीक-ठीक नहीं समझ सकते। जब बड़े होओगे तब अच्छी-अच्छी पुस्तकोंमें यह सारा इतिहास बाँचोगे। इस समय तो सिर्फ इतना ही

याद रक्खो कि हमारे बाप-दादे अपने देशके प्रति बहुत ही प्रेम रखते थे । तभी अपना देश आबाद था और आबादीके कारण ही लोग सुखी थे। इतना ही नहीं, आज भी जो लोग अपने देशपर प्रेम रखते हैं, वे ही लोग सुखी हैं और वही देश सारी दुनियामें सबसे अधिक होशियार है। इसलिये हमें भी अपने देशपर बहुत ही प्रेम रखना चाहिये और अपने स्वार्थ तथा तन, मन और धनका बलिदान करके ऐसा काम करना चाहिये जिसमें अपने देशका भला हो।'

आज समय हो गया है। इसलिये इस विषयको बहुत-सी बातें मैं तुम्हें सोमवारको समझाऊँगा। ऐसा कहकर मास्टरने विद्यार्थियोंको छुट्टी दी।



# १२—स्वदेश-प्रेम (२)

## स्वदेशपर प्रेम रखनेके लिये क्या करना चाहिये ?

ऊपरका पाठ सुनकर बुद्धिनाथकी दादीने कहा—'यह तो बहुत अच्छी बात है। अपने देशपर प्रेम रखना चाहिये। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता, परन्तु अपने देशपर प्रेम रखनेके लिये हमें क्या करना चाहिये, यह तो मेरी समझमें कुछ न आया।'

यह सुनकर बुद्धिनाथने कहा—'दादीजी ! यह भी इसमें बताया गया है। अब अगले पाठमें यह बात आयेगी। तुम्हारी आज्ञा हो तो बाँचूँ ?'

दादीने कहा—'अपनी मा, मोटू भैया, गंगा बहिन और नयी बहू, सबको बुलाकर, पीछे बाँचो। इस भली बातको ये सभी सुनें तो अच्छा हो।'

इसके बाद दादीके बुलानेपर घर तथा अड़ोस-पड़ोसमेंसे सब लोग आ गये। उनके आगे बुद्धिनाथ यह पाठ बाँचने लगा—

अपने देशके मनुष्योंको दुखी देखकर दुखी होना और उनको सुखी बनानेका उपाय करना—इसका नाम स्वदेश-प्रेम है।

देशकी आबादी और सुखका आधार विद्या है। देशमें जैसे हो, वैसे विद्या बढ़ाना और कोई भी अपढ़ न रहे, ऐसा उपाय करना—इसका नाम स्वदेश-प्रेम है।

हमारे देशमें सद्‌गुण और सुख बढ़े और कोई भी भिखारी न रहे, ऐसे भले कामोंमें जीवन लगाना—इसका नाम स्वदेश-प्रेम है।

सरकारी अफसरोंके द्वारा किसी भी कानूनसे लोगोंकी हानि न हो—ऐसे परिवर्तन कराने का नाम भी स्वदेश-प्रेम है।

हमारे धर्ममें जो पीछेसे गड़बड़ी और वहम आ गये हैं, उन्हें निकालकर अपने धर्मको, स्वरूपको

सब लोग ठीक-ठीक समझें—ऐसे उपाय करने का नाम स्वदेश-प्रेम है ।

हमारे देशमें कला-कौशल बढ़े, धन्धा-रोजगार बढ़े, नयी-नयी खानें निकलें और हमारी जरूरतकी सारी चीजें अपने देशमें ही बनें, ऐसे उपाय करना —इसका नाम स्वदेश-प्रेम है ।

हमारे देशकी स्त्रियोंमें ज्ञान बढ़े, वे वहमोंके जालसे छूटें, वे पुरुषोंकी मदद कर सकें, उनको बीमारकी अच्छी तरह सार-सँभाल करना आवे । उनको स्वच्छ रसोई बनाना आवे । उनमें सद्‌गुण और होशियारी बढ़े, उनमें कुटुम्बके प्रति प्रेम बढ़े । उन्हें भलीभाँति अपने बच्चोंको शिक्षा देना आवे और अपने ऊँचे आचार-विचारोंमें तथा अपने देशको मदद करनेके कामोंमें वे हिस्सा ले सकें ऐसा करना——इसका नाम स्वदेश-प्रेम है ।

अपने देशमें कोई भी आदमी आलसी न रहे, कोई भी आदमी धन्धे-रोजगार बिना न रहे, कोई भी आदमी भूखों न मरे, किसी भी आदमीकी ईश्वरप्रदत्त बड़ी शक्तियाँ दब न जायँ और

बढ़नेमें जिस प्रकारकी सहायता की जरूरत हो वह मिल सके और धर्मके बारेमें, प्रजाके हकके बारेमें, नीतिके बारेमें और घर-द्वारके बारेमें मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता बनाये रख सके तथा राज्यकी व्यवस्था पर अपना अंकुश रख सके— ऐसा उपाय करनेका नाम स्वदेश-प्रेम है।

हमारे देशका हवा-पानी बहुत अच्छा है और हमारे देशका बड़ा आधार खेती-बारीके ऊपर है। इसलिये हमारे देशके किसानोंकी हालत सुधरे, अपने देशमें नये-नये प्रकारके फल-फूल उत्पन्न हो सकें, अपने देशमें खूब अन्न उपजाया जा सके और किसी साल वर्षा न हो तो भी लोगोंको महँगी और अकालका दुःख न भोगना पड़े, ऐसा उपाय करनेका नाम स्वदेश-प्रेम है।

अपने देशकी जमीन और पहाड़ोंमें ईश्वरने नाना प्रकारके अक्षय भण्डार भर रक्खे हैं। जैसे सोना, चाँदी, लोहा, कोयला, किरासन, पत्थर, धातु, नाना प्रकारकी मिट्टी, हीरा, माणिक आदि सैकड़ों प्रकारकी खानें भर दी हैं। गंगा, यमुना,

सिंधु, नर्मदा आदि बड़ी-बड़ी नदियोंमें खूब जल भरा है, इन सबका यथायोग्य उपयोग करके खेती-बारीको बढ़ाना, गरीबोंको रोजी देना और देशकी सब प्रकारकी दौलत और शक्तिको बढ़ानेका उपाय करना—इसका नाम स्वदेश-प्रेम है ।

सार यह है कि अपने देशके हर एक आदमीको हमेशा ऐसा ही विचार करना चाहिये कि मैं अपने देशका और अपने भाई-बहिनोंका कैसे भला कर सकूँ ? केवल इसका विचार करके ही चुप न रहे, पर जो आदमी जिस काममें मदद कर सके, वह उसमें मदद किये बिना न रहे । जैसे देशकी भलाईके लिये धनवानोंको धनकी मदद करनी चाहिये, विद्वानोंको विद्याकी मदद देनी चाहिये, कारीगरोंको कारीगरीकी मदद करनी चाहिये, गरीबोंको अपने शरीरकी मेहनतसे मदद करनी चाहिये, स्त्रियोंको अपनी अच्छी भावनासे मदद करनी चाहिये और बालकोंको भी भाँति-भाँतिके स्वदेश-प्रेमके विचार जल्दी सीख लेने चाहिये, इसका नाम स्वदेश-प्रेम है ।

इस प्रकार देशको आबाद करनेके लिये जिससे जो बन पड़े, वह अच्छा काम करे तो कुछ ही वर्षोंमें देश आबाद हो सकता है और हम सब बहुत सुखी हो सकते हैं। अपने देशकी भलाईके लिये अपने स्वार्थका त्याग करके जो लोग हृदयकी लगनसे देशकी सेवा करते हैं, उनको सम्मान प्रदान करना, उनके ऊपर प्रेम रखना और अपनेसे जहाँतक हो सके, उनकी सहायता करना—इसका नाम स्वदेश-प्रेम है। यदि कभी किसी प्रकारकी भी मदद न हो सके तो उनके विचारोंको सुनना और उनका समर्थन करना चाहिये, इसका नाम भी स्वदेश-प्रेम है।

मेरे प्यारे बालको! अभी तो बालक हो इसलिये अभी तुमसे इसमेंसे कुछ भी नहीं बन सके तो तुम चिन्ता न करना। इन सब बातोंको समझने और याद रखनेकी कोशिश करोगे तो जब बड़े होओगे, तब इससे तुमको बहुत ही लाभ होगा। इसलिये इसको जरूर बार-बार पढ़ो, याद रक्खो और अपने दूसरे भाई-बन्धुओंको भी सुनाओ और पढ़ाओ।

इस पाठको सुनकर बुद्धिनाथकी दादीने कहा- 'अहा ! यह तो बहुत ही मजेदार पाठ है । ऐसी बात तो सबको जाननी चाहिये । मैं तो समझती थी कि लड़कोंकी किताबोंमें चूहे, बिल्लीके बच्चे बन्दर, कुत्तेकी या चिड़ी-कबूतरोंकी ही बातें होंगी पर इसमें तो बड़ी अच्छी बातें हैं ।' बेटा ! ऐसी बातें तो मुझे रोज सुनाया करो । 'कमला ! इन लड़कोंने हमको ऐसी बुद्धिमानीकी बातें सुनायीं इसलिये इनका मुँह मीठा कराओ ।' गुड़के मटकेमेंसे थोड़ा-थोड़ा गुड़ इन सबको दो । क्यों मोतीलाल मास्टर ?

तब बुद्धिनाथको पढ़ानेके लिये आये हुए मोतीलाल मास्टरने कहा—'हाँ जी, ठीक है । आप कभी लड़कोंके पाठ सुनती ही नहीं है, आज यह पाठ आपने सुना, यह खुशीकी बात है । और यह तो बहुत ही खुशीकी बात है कि यह पाठ आपको पसन्द आया । लड़कोंपर आपके मनमें स्नेह आया और आपने इनका मुँह मीठा करके इनको प्रोत्साहन दिया, यह तो इससे भी अधिक खुशीकी

बात है। स्वदेश-प्रेमकी बात सुननेके लिये आपने बहू-बेटियोंको तथा अड़ोसी-पड़ोसियोंको बुलाया, यह तो सबसे अधिक खुशीकी बात है और आजकी तरह रोज-रोज लड़कोंके पाठ सुननेकी आपने इच्छा प्रकट की, यह इससे भी अधिक खुशीकी बात है; क्योंकि ये सारी बातें स्वदेश-प्रेमकी ही हैं।'

मोतीलाल मास्टरकी यह बात सुनकर वहाँ बैठी हुई सब स्त्रियोंको बहुत आनन्द हुआ और जब अवसर मिले, तभी ऐसी बातोंमें प्रोत्साहन देनेका इनका मन हुआ। इसके बाद मुँह मीठा करके लड़के वहाँसे खेलनेके लिये चले गये।



# १३–स्वदेशी वस्तुएँ (१)

इसके बाद दूसरे दिन सन्ध्याके समय बुद्धिनाथ की दादीके यहाँ कलकी अपेक्षा अधिक स्त्रियाँ इकट्‌ठी हो गयीं। आजके लड़के कैसी अच्छी बातें सीखते हैं, वे इस विषयकी चर्चा कर रही थीं कि इतनेमें बुद्धिनाथके साथ लड़कोंकी टोली भी आ पहुँची। साथ ही मोतीलाल मास्टर भी अब सदाकी अपेक्षा कुछ पहले ही आ गये।

बुद्धिनाथ थोड़ा आराम करके नीचेका पाठ बाँचने लगा। अपने हाथसे कलम उठाकर शंकरने कहा–'हरिप्रसाद ! इस स्वदेशी कलमको आपने देखा है ?'

शंकरने कहा–'मेरे पिताने मुझे दिलवा दी थी।'

हरिप्रसाद बोला–'मैं भी अब स्वदेशी कलम ही लूँगा।'

पटेलने कहा—'मैं भी स्वदेशी कलम लूँगा ।'

रमणलाल बोला—'मेरे लिये भी मेरे पिताने स्वदेशी कपड़ेका कुर्ता सिलवाया है ।'

यह सुनकर त्रिवेदीने कहा—'तुम सब स्वदेशी-स्वदेशी कर रहे हो, परन्तु स्वदेशी वस्तुमें क्या लाभ है और विदेशी वस्तुमें क्या खराबी है ?'

मोदीने कहा—'उस दिन स्वदेशी सभामें तुम थे या नहीं ?'

त्रिवेदी बोला—'मैं यजमानके घर अपने दादाके साथ जीमने चला गया था, इससे मैं वहाँ नहीं पहुँच सका ।'

मोदीने कहा—'अरे मूर्ख ! लड्डूके फेरमें स्वदेशके कल्याणकी सभामें नहीं गया । ऐसे भाषण क्या रोज सुननेको मिलते हैं ? विलायत और अमेरिकामें तो अच्छी फीस देकर लोग भाषण सुनने जाते हैं और यहाँ हम मुफ्त भी न जायँ । बरही और मासिक श्राद्ध खानेमें तू कबतक पड़ा रहेगा ? अब छठी किताब पढ़ता है तो इसका क्या यही फल है ? इसका जरा विचार तो कर ।'

त्रिवेदीने कहा–'क्या करूँ भाई साहब! दादाके सामने मेरी क्या चलती है? मैंने सुना था कि भाषण करनेवाले पण्डितजी बहुत होशियार हैं। इससे मैंने उनसे कहा कि आज सभामें जाना है, इसलिये मैं जीमने नहीं जाऊँगा। लेकिन वे तो उल्टे मेरी हँसी उड़ाने लगे और कहने लगे कि बातें सुननेसे क्या मिलेगा? जीमने चलेगा तो पेटमें पावभर घी पड़ेगा।' जहाँ इस तरह हिसाब लगाया जाय वहाँ मेरा क्या अपराध?'

यह सुनकर पटेलने कहा–'हमलोगोंकी यही हालत है। उस दिन मैं भी उस सभामें नहीं जा सका। इसलिये इस भाषणकी बात तो बताओ।'

शंकरने कहा–'पण्डितजीका भाषण बहुत जानने-योग्य था। उसमें उन्होंने इस प्रकार कहा था–

यदि हम स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार करें तो देशका धन अपने देशमें ही रहे। इससे अपना देश आबाद हो। पर उसके बदले यदि हम परदेशी

वस्तु काममें लायेंगे तो अपने देशका धन परदेशमें चला जायगा। हम गरीब हो जायँगे और अपने दूसरे बहुतेरे भाई-बन्धुओंको धन्धे-रोजगारके बिना भटकना पड़ेगा। इसलिये हमें अपने देशकी ही वस्तुएँ लानी चाहिये।

पण्डितजीने कहा—हर एक आदमी एक वर्षमें सिर्फ दस-दस रुपयेकी ही विदेशी वस्तुएँ लें तो भी हमारे देशसे अरबों रुपये विदेशोंमें चले जायँगे। इस प्रकार वर्षोंसे हमारे देशसे इतना अधिक धन विदेश चला जा रहा है, इससे यदि हम गरीब हो गये तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? यदि हम स्वदेशी वस्तुओंका प्रयोग करें तो यह सारा धन अपने देशमें ही रहे और इससे हमलोग कितना सुखी हो जायँ और हमारा देश कितना आबाद हो जाय?

देशका धन परदेशमें जाते रहनेपर हम गरीब हो जाते हैं और दूसरे लोगोंके सामने हमें नीचा देखना पड़ता है और वे लोग अपने स्वार्थके लिये जैसे कुचलना चाहते हैं वैसे ही कुचलवाना पड़ता

है । हमें तो अपने देशकी ही चीजें काममें लेनी चाहिये ।

फिर, विदेशी वस्तुएँ काममें लेनेसे हमारा धर्म नष्ट होता है; क्योंकि जो चीजें हम खाते नहीं, जिन चीजों को हम छूते नहीं और जिन वस्तुओंके व्यवहारमें हम पाप मानते हैं, वैसी ही चीजें विदेशी वस्तुओंमें होती हैं; क्योंकि विदेशी लोगोंका और अपना धर्म अलग-अलग है । अतः हमारे लिये जिन वस्तुओंका निषेध है, उनका निषेध उन लोगोंके लिये नहीं है । अतएव अपने धर्मके लिये भी हमें विदेशी वस्तुओंके व्यवहार न करनेका निश्चय करना चाहिये ।

फिर हमारा देश गरम और यूरोपके देश ठण्डे हैं । हमारा खान-पान दूसरी तरहका और विदेशियोंका खान-पान दूसरी तरहका है । इसलिये प्राकृतिक रीतिसे भी स्वभावसे ही अपनी देशकी दवाएँ अपने और अपने देशकी खाने-पीनेकी वस्तुएँ जैसी हमें अनुकूल पड़ती हैं, वैसी विदेशी दवाएँ और खाने-पीनेकी वस्तुएँ अनुकूल नहीं

पड़तीं। इसलिये कपड़ेके अतिरिक्त विदेशी खाने-पीने की चीजें तथा दवाएँ भी हमें काममें नहीं लानी चाहिये।

फिर, देशी वस्तुएँ टिकाऊ होती हैं और विदेशी वस्तुएँ कमजोर होती हैं। देशकी वस्तुएँ सस्ती होती हैं और विदेशी महँगी होती हैं। देशी वस्तुओंके बिगड़नेपर उनके सुधारनेके लिये हमारे पास साधन होता है और विदेशी वस्तुओंके बिगड़नेपर उनके सुधारने के साधन शीघ्र नहीं मिलते। देशी वस्तुओंमें कोई धोखाधड़ी हो तो उसकी हमें तुरन्त खबर हो जाती है, पर विदेशी वस्तुओंकी बनावट ऐसी होती है कि उसमें जो धोखाधड़ी हो तो उसको हमें जल्दी खबर नहीं होती। देशी वस्तुएँ अपने रीति-रिवाज और शरीरके अनुकूल होती हैं और परदेशी वस्तुएँ अपने रीति-रिवाजोंके तथा अपने शरीरकी आवश्यकताके लिये जितनी अनुकूल होनी चाहिये, उतनी नहीं हो सकतीं। देशी वस्तुओंमें कोई उलट-फेर दीख पड़े तो वह बदली जा सकती है,

पर विलायती वस्तु खराब निकले तो हम उसके लिये किसको उलाहना देने जायँ? यदि वह विदेशी वस्तु अच्छी भी निकले तो भी देशका उतना पैसा जो विदेश चला गया, वह लौटकर फिर अपने देशमें थोड़े ही आवेगा ?

अब दूसरा उदाहरण सुनो। तुमने अपने देशके चमारसे जूता बनवाया हो और वह अच्छा न बना हो तो तुम उसे उलाहना दे सकते हो और उसे भी शर्मसे दबना पडता है, पर तुमने महँगे दामके विदेशी जूते खरीदे हों और वे यदि महीना पन्द्रह दिनोंमें फट जायें तो तुम किसे उलाहना देने जाओगे ? इसलिये हमें स्वदेशी वस्तुएँ ही काममें लानी चाहिये !

# १४—स्वदेशी वस्तुएँ (२)

पिछले पाठमें कही हुई बातें सुनकर मनमोहन ने कहा——पण्डितजीकी यह बात सच है पर जो वस्तुएँ अपने देशमें नहीं बनती हैं, उनके लिये क्या किया जाय ? जैसे गरमीके दिनोंमें मेरे पिताजीको मलमलका कुर्ता पहननेके लिये चाहिये, परन्तु उतना महीन सूत अपने देशमें नहीं होता। इसलिये बारीक विदेशी मलमल हमें व्यवहारमें लानी पड़ती है। आज हमारे घरमें रंग लगानेका काम चल रहा है, पर स्वदेशी वार्निश और रंग नहीं मिलते, इसलिये विदेशी वार्निश और विदेशी रंग काममें लाने पड़ते हैं। इसके लिये पण्डितजी क्या कहते हैं ?

बाबूने कहा---इस विषयमें भी पण्डितजीने कहा था, जिस वस्तुको ईश्वरने अपने देशमें पैदा न किया हो या अबतक जो वस्तुएँ अपने देशमें नहीं बनती हैं और ऐसी वस्तुओंकी यदि हमको खास जरूरत हो तथा वे विदेशी लेनी पड़ें तो इसमें कोई अड़चन नहीं है। पर वे चीजें हमें अपने मौज-शौकके लिये नहीं, बल्कि उससे देशकी भलाईमें सहायता मिलती हो और अपने मेहनतमें, खर्चमें और समयमें बचत होती हो तो हमें इसके लिये विदेशी चीजें काममें लेनी चाहिये। फिर विदेशी वस्तुओंसे अपने देशको लाभ पहुँचाना, यह तो बड़ी खूबीकी बात है। विलायतके लोग ऐसा ही करते हैं।

जैसे वे हमसे बहुत सस्ती रुई ले जाते हैं और उनसे मलमल तैयार करके बहुत महँगे दामोंमें हमें दे देते हैं।

इसी तरह उन लोगोंको हम बहुत सस्ता तेल देते हैं और जरा सा रूप बदलकर वही तेल वे हमको अठगुने दामोंमें देते हैं। इसी तरह अलसी,

आँवलेकी---बबूरकी छाल, नोल, हल्दी, मजीठ और कुसुम्भी आदि रंगकी चीजें तथा दूसरी अनेकों प्रकारकी कच्ची चीजें बहुत ही सस्ते भावमें हम विदेशी लोगोंको देते हैं और बहुत ही महँगे भावमें हम फिर वही वस्तुएँ उनसे खरीदते हैं,इससे हमें तो मट्ठा ही मिलता है और मलाई वे लोग खा जाते हैं।

ये सुनकर त्रिवेदी ने कहा--ओहो! इतना अधिक नफा वे खा जाते हैं और फिर भी हमारी आँखें नहीं खुलतीं ? यह तो बहुत ही बुरी बात है। हमें अबतक इन सारी बातोंका पता ही नहीं था और हम बच्चे हैं, इससे हमारी चलती भी नहीं। यदि हमारी चलती तो यह सब जाननेके बाद हम कभी भी परदेशी चीज इस्तेमाल नहीं करते और मनमोहनके बाप का भी मलमलके बिना क्यों नहीं काम चलता? अपने गाँवका वह बैरिस्टर मथुरादास अब देशी खादी कैसे शौकसे पहनता है ? वह कहता है कि मोटे काले विलायती कोटमें कोई बाधा नहीं, फिर खादीको खराब क्यों

कहा जाय ? मुर्दार मलमल पहननेवाले अपने भी मुर्दे-जैसा बन जाते हैं और देशी मजबूत मोटा कपड़ा पहननेसे अनेक प्रकारके लाभ होते हैं ।

इसपर सब लोगोंने स्वदेशी वस्तु व्यवहार करनेका निश्चय किया । इतनेमें संध्या हो गयी और सब लड़के अपने-अपने घर चले गये ।



# १५–हमारा देश पहले कैसा था ?

दूसरे दिन लड़कोंसे गुरुजीने पूछा–हरिदास ! प्राचीन कालमें अपना देश कैसा था ? यह तुम जानते हो ?

हरिदासने कहा–हाँ गुरुजी ! मैंने एक पोथीमें पढ़ा है कि पुराने जमानेमें अपना देश बहुत धार्मिक और धनी था। लोग बहुत बलवान् और नीतिमान् थे। सब लोग सुखी थे और व्यापार भी धड़ल्लेसे चलता था।

गुरुजीने दूसरे लड़केसे पूछा–रामचन्द्र ! तुम इस विषयमें कुछ जानते हो ?

रामचन्द्रने कहा–हाँ गुरुजी ! मेरे दादा कहते हैं कि आजकल हो हम भिखारी-जैसे हो गये हैं, किन्तु पुराने जमानेमें बहुत अच्छे थे। अनाज सस्ता, घी सस्ता, गाय सस्ती और घरका भाड़ा

सस्ता था और सभी आदमियोंको धन्धा-रोजगार मिलता रहता था, इससे कोई भी आदमी भूखों नहीं मरता था। उस समय न इतनी उपाधि थी, न छल-कपट था और न इतने रोग थे। (आजकलकी तरह न व्यापारी चोरी करते थे, न बेहकका पैसा लेते थे और न किसीको ठगते थे, झूठे बहीखाते बनाना तो महापाप मानते थे। मुँहसे जो बात एक बार कह दी, वही सच्ची। इसी प्रकार उस समय राजा तथा हाकिम लोग भी ईमानदार, न्यायकारी और प्रजारक्षक थे। वे न घूस लेते थे, न किसी को सताते थे। प्रजाको पुत्रकी तरह पालते-पोसते थे।) इससे उस समय हमारे देशमें सब लोग सुखी थे।

गुरुजीने तीसरे लड़केसे पूछा—ईश्वरलाल ! इस विषयमें तुम कुछ जानते हो ?

ईश्वरलाल बोला—हाँ गुरुजी ! हमारे घर व्यासजी रोज कथा बाँचने आते हैं। वे श्रीकृष्णके समयकी द्वारकाका वर्णन कर रहे थे; उसमें आया था कि लोग हीरे-मोती और माणिकके गहने

पहनते थे, सोने-चाँदीके बर्तन काममें लाते, हाथी-घोड़ोंकी गिनती नहीं थी, गायें तो असंख्य थीं, आदमी विमानोंमें बैठकर आकाशमें उड़ते थे, हाथियोंपर रत्नोंसे जड़े सोनेके हौदे और हीरे-मोतियोंकी झूलें होती थीं। सोनेके कलशोंसे स्त्रियाँ पानी भरतीं और उस समय द्वारकाके लोग इतने सुखी थे कि स्वर्गके देवता भी द्वारकामें जन्म लेनेकी कामना करते थे।

यह सुनकर गुरुजीने कहा—तुम तीनों ने बहुत ही अच्छा जवाब दिया है। यह विषय स्कूली किताबोंमें न हो तो भी इसकी जानकारीके लिये तुम्हें ध्यान देना चाहिये: क्योंकि इस तरहकी बातें जाननेसे बुद्धि बढ़ती है। अच्छा-बुरा समझमें आता है। हम कैसी बुरी स्थितिमें आ गये हैं, इसका हमें भान होता है और इसके लिये उपाय करनेकी जरूरत समझमें आती है और बड़े होने पर ये जानी हुई बातें बहुत काम देती हैं। इसलिये ज्ञान हमें जहाँसे भी मिले और जैसे भी मिले, प्राप्त करते रहना ही चाहिये।

पुराने जमानेमें अपना देश आबाद था और हमलोग सुखी थे, यह बात ठीक है। परन्तु इतना जान लेनेसे ही काम नहीं चलता। इसका कारण जानेंगे तभी लाभ होगा। इसलिये अब मुझे बतलाओ कि पुराने जमानेमें किस कारणसे हम-लोग सुखी थे?

यह सुनकर एक लड़का बोला—उस समय अपने देशमें कला-कौशलकी उन्नति थी और अपना माल विदेशोंमें जाता था तथा विदेशी वस्तुएँ लोगोंको नहीं लेनी पड़ती थीं—इससे वे सुखी थे।

दूसरेने कहा—लोगोंमें एकता थी और आपसमें एक दूसरेकी लोग मदद करते थे—इससे लोग सुखी थे।

तीसरेने कहा—उस समयके लोग बहुत धार्मिक, सच्चे, ईमानदार, अपने हक्का खानेवाले, नीति-मान् और दयालु थे—इससे वे सुखी थे।

चौथेने कहा—अपना धन और अन्न अपने देशमें ही रहता था, विदेशमें नहीं जाता था—इससे लोग सुखी थे।

पाँचवेंने कहा—उस समय अपना राज्य था और विदेशी राजा नहीं था—इससे लोग सुखी थे।

छठेंने कहा—उस समय लोगोंमें विद्या बहुत थी और वे लोग आज-जैसे अज्ञानी न थे—इससे सुखी थे।

सातवेंने कहा—आजकल हम कायर बन गये हैं, परन्तु उस समय सब लोग बहादुर थे और देशके लिये अपना प्राणतक दे देते थे—इससे वे सुखी थे।

ये सब जवाब सुनकर गुरुजी बहुत खुश हुए और बोले—ओहो! यह सब तुमलोगोंने कहाँसे सीखा? मैंने तो तुमलोगोंको ये बातें नहीं सिखायी थीं।

तब रघुनाथने कहा—मेरे बड़े भाईने 'बाल समाज' नामकी एक मण्डली बनायी है, उसमें छुट्टीके दिन सब लड़के इकट्ठे होते हैं। जो लड़के इस सभामें जाते हैं, उन सबको हर सप्ताह एक छोटी पोथी दी जाती है, उसमें ऐसी अच्छी-अच्छी बातें लिखी होती हैं। फिर वहाँ स्वदेशभक्त

नामके एक स्वामीजी आकर एक घण्टेतक इस तरहकी बातें हमको समझाते हैं, इसीसे इस तरहके जवाब देना हमको आता है ।

यह सुनकर गुरुजीने कहा–यह भी बहुत खुशी-की बात है। ऐसे मण्डल तो सब जगह होने चाहिये। अब अपना समय हो गया है। घर जानेके पहले एक बात मुझको बतलाओ कि पुराने जमानेके समान अपना देश फिरसे आबाद हो और हम सब लोग सुखी हों, इसके लिये हमें क्या करना चाहिये ?

तब नरहरिने कहा–हाँ गुरुजी ! ऊपर जो कारण बताये गये हैं, उनको समझकर ज्ञान प्राप्त करना, लोगोंको अनुकूल हो और लाभदायक हो ऐसा धन्धा-रोजगार बढ़ाना, ईमानदारी, सच्चाई, धर्म और नीतिपर कायम रहना तथा बहादुरी बढ़ानेके लिये मेहनत करना–इस प्रकार करें तो कुछ ही वर्षोंमें हम भी पुराने जमानेके लोगोंके समान बहादुर और सुखी हो सकते है

# १६—अपना देश आज कैसा है ?

गुरुजीने पुछा—शम्भु ! अपनी फीसके पैसे लाये हो ?

शम्भु बोला—मेरे पिताजी कहते हैं कि चार महीनेसे नौकरीके लिये मैं भटक रहा हूँ, पर अभी कोई नौकरी नहीं मिली। माणिकचन्दने भी अब अधिक पैसे उधार देनेसे इनकार कर दिया है, इसलिये मुझसे तुम्हारी फीस नहीं दी जा सकती। मास्टरजीसे कहना कि कृपा करके कुछ दिन और चलावें और नहीं चलावेंगे तो तुझे स्कूल छोड़ देना पड़ेगा।

यह सुनकर मास्टर विचारमें पड़ गये: क्योंकि शम्भु-जैसे होशियार लड़केको गरीबीके कारण स्कूलसे निकालना पड़े यह उनको ठीक नहीं लगता था। पर सरकारी स्कूलके नियमके अनुसार फीस

लिये बिना गुरुजी उसे रख भी नहीं सकते थे। इतनेमें एक लड़केने आकर कहा–'गुरुजी! आज मुझे गांवसे बाहर जोमने जाना है, इसलिये छुट्टी लेने आया हूँ।' मास्टरजीने कहा–'जीमनेके लिये कहीं परीक्षाके दिनोंमें छुट्टी ली जाती है ?'

शान्तिगिरि बोला–मैं तो बिल्कुल ही न जाऊँ, पर घरमें एक दाना भी नहीं और मेरे पिता कल जुआर लेने गये थे, पर अब तक नहीं आये। इससे मेरी माँ उदास हो गयी और रोने लगी कि आज क्या खायँगे ? इतनेमें भीम कह गया कि आज बनियोंके यहाँ जीमनवार है, वहाँ जीमने आना।

इस तरह बात चलही रही थी कि इतनेमें वहाँ एक विधवा स्त्री आयी और उसने गुरुजीसे कहा–

इस मेरे रामूको आप समझाइये न! यह कहता है कि खराब कपड़े पहनकर स्कूलमें जाना नहीं होता, इसलिये मुझे अच्छे कपड़े खरीद दो। इस बेचारेको क्या पता कि मैं दाल दल-दलकर कठिनतासे किसी तरह पेट भरती हूँ, अच्छे कपड़े कहाँसे लाऊँ ? अपने लड़केको पहनाना-ओढ़ाना

किसे नहीं अच्छा लगता ? इस लड़केने एक पतलेसे कुर्तेमें सारा जाड़ा बिता दिया, यह मुझे बहुत ही अखरा, पर मैं करती क्या ? यों हमलोग क्या कहीं माँगने जायँ।' यों कहते-कहते वह स्त्री रो पड़ी और आँचलके छोरसे आँसू पोंछती हुई बोली कि इसके मास्टरसे जरा कह दीजियेगा कि अभी कुछ दिन अच्छे कपड़ोंके लिये ताकीद न करें ?'

इस तरह बात चल रही थी, इतनेमें सहकारी अध्यापक एक लड़केको वहाँ लाये और बोले कि—'यह लड़का पाठ याद नहीं करता है, इसको इतिहास नहीं आता, भूगोल नहीं आता और गणितमें भी यह शून्य है, इसलिये अब इसका क्या करें ? इसी कारण इसे मैं आपके पास लाया हूँ।'

गुरुजी बोले—यह लड़का तो होशियार है, इसे क्यों नहीं आता ? यह तो पहले नम्बरका लड़का है। क्यों रामजी ! आज तुम्हें क्या हो गया है ? पाठ क्यों नहीं याद करते ?

वह लड़का बोला—गुरुजी ! किताबें ही नहीं हैं, मैं क्या करूँ ?

गुरुजी बोले—किताबें क्यों नहीं ले लेते ? यहाँ न मिलती हों तो मुझसे कहो, मैं मँगवा दूँगा ।

रामजीने कहा—मेरे काका कहते हैं कि किताबों के लिये जितने पैसे चाहिये उतने मेरे पास नहीं हैं । पन्द्रह रुपयेके वेतनमें पहले किसी तरह काम चलता था, पर आज मँहगाई बहुत बढ़ जानेके कारण हर महीनेमें तीन-चार रुपये घट जाते हैं, इसलिये तुम्हें किताबें कहाँसे दिलाऊँ ? पढ़ना चाहे छोड़ दो या चाहे ऐसे ही चलाओ, दूसरा कोई उपाय नहीं है । जब वे यों कहते है, तब मैं क्या करूँ ? तब किताबोंके बिना पाठ कहाँसे याद हो ।

यह सुनकर गुरुजीका दिल भर गया और उन्होंने एक लम्बी साँस ली । उनको लगा कि हे प्रभु ! यह कैसा गजब है ? हमारा देश कितना अधिक गरीब है ?

इसके बाद गुरुजीने कहा—कान्तिलाल ! तुम कुछ कहोगे ?

कान्तिलालने कहा—हाँ गुरुजी ! मैं जब अपने पिताके साथ सावनके महीनेमें सोमवारके दिन शिवमन्दिरमें दर्शन करने गया था, तब वहाँ मैंने रास्तेके दोनों ओर पाँत बाँधे भिखारियोंको देखा। मेरे पिताने दस रुपयेके पैसे लिये और वे हर एकको एक-एक पैसा देने लगे। पर भिखारी इतने अधिक थे कि दस रुपयेके पैसोंसे भी काम पूरा न हुआ। उसमें बहुत-से अन्धे थे, बहुत-से कोढ़ी थे, बहुत-से बूढ़े थे, कुछ तो मेरे-जैसे लड़के थे जो पढ़ सकते थे और बहुत-से ऐसे आदमी थे जिनको देखकर दया आती थी। उन सबोंके बारेमें मेरे पिताजी कहते थे कि इनके रहनेके लिये घर नहीं, पहननेके लिये पूरा कपड़ा नहीं और खाने-पीनेके लिये भी कुछ नहीं है। जब एक गाँवमें इतने अधिक दुखी आदमी हों तब सारे देशमें कितने अधिक दुखी आदमी होंगे ? इसलिये मैं कहता हूँ कि अपने देशके लोग बहुत दुखी हालतमें हैं।

गुरुजीने कहा—शाबाश, तुमने बहुत अच्छा जवाब दिया। इसी तरहसे यात्रा, मेला, प्रदर्शन

आदि देखनेके समय हर एक लड़के को अपनी बुद्धिसे कुछ सार लेना चाहिये।

गुरुजीने कहा—अच्छा हीरालाल! हमारा अपना देश आजकल कैसा है, इस बारेमें तुम कुछ जानते हो?

हीरालालने कहा—हाँ गुरुजी! मेरे बड़े भाईको रसायनशास्त्रका अभ्यास करना था, पर पैसेकी कमीके कारण उनको वकीलके आफिसमें नौकरी कर लेनी पड़ी। मेरा चचेरा भाई अच्छा वैद्य हो सकता था, पर पैसेका साधन न होनेके कारण उसने कपड़ेकी दुकानमें नौकरी कर ली है। पिछली साल जग्गू मेरे साथ पढ़ता था, उसका बाप फीस न दे सका और माफीकी जगह खाली न थी, इससे उसे स्कूल छोड़ना पड़ा। मेरे पड़ोसी पद्मसिंहके पास पोथी लेनेके लिये पैसा न होनेके कारण लाचार होकर उसने स्कूल छोड़ दिया। मेरे मामाके लड़केको भी यही हालत है। वह बहुत होशियार है, पर उसके गाँवमें आगे पढ़नेके लिये स्कूल नहीं है और गाँवसे बाहर जाकर पढ़नेके

लिये उसके पास पैसे नहीं है। इसलिये हिन्दीकी सात पोथी पढ़कर अब वह गाँवमें भटकता है। ऐसे बहुत-से उदाहरण मैं देखता हूँ और मेरे बड़े भाई भी ऐसी ही बातें किया करते है। इससे मैंने समझा है कि अपना देश बहुत गरीब है और अपने लोग बहुत दुखीं हैं।

गुरुजी बोले—कन्हैया ! इसके बारेमें तुम कुछ कह सकते हो ?

कन्हैयाने कहा—हाँ गुरुजी ! कल जब मैं घर पहुँचा, तब देखा मेरी मा रो रही थी और पड़ोसिनसे कह रही थी कि—'बहिन ! मेरी बहिनकी लड़की विधवा है, उसकी रोटीका कहीं ठिकाना नहीं है, अपनी मोहिनी भी बेचारी दुखियारी है और मेरे जेठके लड़केकी स्त्री भी रोटी बिना भटक रही है। इसपर फिर बेचारी इस काशीपर भी दुख आ पड़ा। अपना गरीब काफिला अपने लोगोंके पास कौन-सा धन रक्खा है ! बहुत होता है तो दो-चार सौके गहने होते हैं। ( उनपर भी घरवाले आजकल ललचायी आँखोंसे देखते हैं। )

उतनेसे जिन्दगी कैसे कट सकती है ? लाज-शर्मके बखेड़े हैं। पैसा पास नहीं और खर्च बढ़ता जाता है। फिर अधर्म हुए बिना कैसे रहे ? हमारे ही सगे-सम्बन्धियोंमें, जिनके रोटीका ठिकाना नहीं है, ऐसी आठ विधवाएँ हैं। फिर सारे देशमें तो न जाने सब कितनी विधवाएँ होंगी। ये बेचारी क्या करें ? इनके जीवनका निर्वाह कैसे हो ? यों कह-कहकर मेरी माँ रो रही थी।

फिर वह कहती थी कि 'पुराने जमानेमें पाँच सेर पीसनेपर सेरभर आटा मिल जाता था, पर उस कलमुँहे व्यापारीने आटेकी मशीन-चक्की बैठाकर उसको भी खो दिया। रुईकी मौसिममें घर बैठे चार घड़ी कपास पील देती तो दो आने मिल जाते, उसको इस यमराज जैसे जीनवालेने जीन बैठाकर छीन लिया। चर्खेसे रोज जहाँ चार पैसे बचते और घरके लोगोंके लिये कुर्ता-चादर मुफ्तमें बन जाते, उसपर इन मुए मिलवालोंने पानी फेर दिया। इस तरह गरीबोंको जो घर बैठे टुकड़ा मिल जाता सो चला गया और वे मुए

अपना घर भरकर मोटरगारियोंमें चढ़े फिरते हैं। अपने गाँवमें पचास घर ढेढोंके थे और वे खादी और धोती बुनकर चैनसे रहते थे। वे भी मिलोंके और विदेशी कपड़ोंके आनेसे धीरे-धीरे टूट गये। क्या कहा जाय सब ओर दुःख-ही-दुःख है।'

अपनी माकी कही हुई इन सच्ची बातोंसे मैंने यह अच्छी तरह समझ लिया है कि हमारा देश बहुत गरीब है और हमलोग बहुत दुखी हैं। लोग कहते हैं कि मिलोंमें मजूरी अच्छी मिलती है, पर जहाँ मिलों और मशीनोंसे लाखों विधवाओं और गरीबोंके परम्पराका धन्धा छीनकर जो सत्यानाश कर डाला है, वहाँ थोड़ेसे आदमियोंको मजदूरोका रोजका रुपया मिल गया तो उससे क्या हुआ। गरीब आदमी शहरोंमें जाकर रहने लगे, उन्होंने शराब पीना सीख लिया, उनके तरह-तरहकी बीमारियाँ लग गयीं।

जब मैंने ऐसी बातें जानीं, तबसे मुझको तो विदेशी और देशी मिलोंके दिखाऊ कपड़ोंके प्रति बहुत ही नीचा भाव हो गया है। महात्मा गाँधीके

आदमी गाँवमें आये और उनकी कही बातें सुनीं तबसे मैंने तो अपनी मासे पूछकर उसे चर्खा ल दिया है और मेरी मा रोज चर्खा कातती है। हमारी देखा-देखी हमारे पड़ोसमें भी घर-घर चर्खा चलने लगे हैं और सबने निश्चय किया है कि अब घरके ही सूतका कपड़ा बुनवाकर पहनेंगे।

गुरुजीने कहा—शाबाश ! तुमने तो आज सबसे अच्छी बात कही। तुम्हारी बातें बिलकुल सच्ची हैं। भगवान् विद्यार्थी दें तो तुम्हारे जैसा। मैं चाहता हूँ कि सब लड़के तुम्हारी बात समझें और तुम्हारे समान बरतें।

इसके बाद एक लड़केकी ओर देखकर मुस्कराते हुए गुरुजीने कहा—क्यों जी ! बावरे भट ! तुम भी कुछ कहोगे ?

तब सिर खुजलाते-खुजलाते और धोती में भरी हुई मैल झाड़ते विचित्र बुद्धिवाले बावरे भटने कहा—एकको स्कूलकी फीस भरनेके लिये पैसे नहीं मिलते थे, दूसरेके घरमें खानेके लिये रोटी नहीं थी, तीसरेके पास स्कूलमें पहनने लायक कपड़े

नहीं थे और चौथेके पास पोथियां खरीदनेके लिये पैसे नहीं थे। इन चारोंसे अधिक प्रमाणकी क्या जरूरत है ? यदि और प्रमाण चाहिये तो बस वह मैं खुद ही हूँ। मेरी धोती के पैबन्द गिन लो, मेरी पोथीके पन्ने गिन लो और इसपर भी प्रमाण पूरा न हो तो मेरे मूँहके चेचकके दाग गिन लो और चार रोटी आटेके लिये मुझे कितनी जगह तामड़ी फेरनी पड़ती है, उसको भी गिन लो इससे तुम्हें विश्वास हो जायगा कि हम कितने गरीब हैं।

इससे भी अधिक यदि प्रमाण चाहिये तो मेरे यहाँ देखो—हमलोग श्राद्धका सीधा, तिपिंडीका दान, दसवेंके लड्डू और संक्रान्तिका दान लेते हैं। जंतर-मंतरका ढोंग करते हैं और ग्रहणका दान तथा मरते वक्तका दान भी लेते हैं; फिर भी पेट नहीं भरता और घरमें चूहे दंड पेलते हैं।

जिन ब्राह्मणोंने सारी दुनियामें सबसे अच्छे-अच्छे शास्त्र बनाये, जो ब्राह्मण सारी दुनियाँमें उत्तम-से-उत्तम थे, जिन ब्राह्मणोंको राजाओंके

राजा भी सिर झुकाते थे और जो ब्राह्मण अपने
ज्ञान और त्यागसे सारी दुनियामें पूजे जाते थे
इन ब्राह्मणोंकी आज ऐसी अधम दशा हो गयी है
यह देखोगे तो तुम्हें विश्वास हो जायगा कि
जिनमें धर्मका बल था, जिनके हाथोंमें बड़ी सत्ता
थी और आज भी जिनकी कुछ-कुछ चलती है
उन ब्राह्मणोंकी जब ऐसी बुरी हालत है, तब
दूसरे लोगोंकी तो बात ही क्या पूछनी है?

ठिगने कद, दुबले शरीर, कानी आँख और
चिथड़ोंके साफेवाला और विचित्र सूरतका
बावरा भट जब बदनको टेढ़ा-मेढ़ा करता हुआ
ये बातें कह रहा था, तब गुरुजी तथा सारे
लड़कोंको उसकी बातें सुननेमें बड़ा मजा आ रहा
था और बीच-बीचमें हँसोंके भी फव्वारे
छूटते थे।

गुरुजीने कहा—अरे बावरे! चौथी किताबवाले
तो तेरे दर्जेमें बहुतसे है, पर उनमें किसीको ऐसा
बोलना नहीं आता और तुझे कैसे आता है?

बाबरा भट बोला—मेरे मामा धनियोंके यहाँ

कथा-वार्ता कहनेका काम करते हैं। इससे उनको तरह-तरहकी बातें याद रहती हैं। वे बातें मैं जब। तब उनसे सुना करता हूँ और वे मुझे भी कहा करते हैं कि 'तेरे बापके समान भीख माँगनेसे काम नहीं चलगा और आजकल कोई भी नहीं देता, इसलिये लोगोंको अच्छी लगे और देशका भला हो ऐसी कथाएँ तू मुझसे सीख ले। इससे तेरा ज्ञान भी बढ़ेगा, गुजर भी होगी और देशकी भलाईकी बात कहकर लोगोंको जगानेसे उनका भी लाभ होगा। इसलिये अपने मामाके पास ऐसी बातें सीखता हूँ, इसीसे मुझे ऐसा बोलना आता है।

यह सुनकर गुरुजी प्रसन्न हो गये और बोले—हमारा देश बहुत गरीब है और हमलोग बहुत दुखी हैं। इसका तुम सबोंको विश्वास हो गया या नहीं ?

सब लड़के बोले—गुरुजी ! पक्का विश्वास हो गया है।

गुरुजीने कहा—अब तुम विचार करो कि अपने

देशको हमें ऐसा-का-ऐसा गरीब बनाये रखन चाहिये या इसमें कुछ फेर-फार करना चाहिये ?

सब लड़कोंने कहा—अबने देशको फिर आबा करना चाहिये और ऐसा उपाय करना चाहिये ि लोग सुखी हों।

गुरुजीने कहा—तुम्हारी यह बात ठीक है, परन् इसके लिये हमें क्या उपाय करना चाहिये, यह तुम जानते हो ? अभी चलो, कल हम इस प्रका की बातें फिर करेंगे ! ऐसा कहकर गुरुजी उ और विद्यार्थियोंको भी छुट्टी मिली।



## १७—देश आबाद कैसे हो ?

इसके बाद दूसरे दिन गुरुजीने कहा—हमारा देश गरीब है और हमलोग दुखी हैं, इस बातको तो तुमने ठीक-ठीक समझ लिया; पर इस गरीबी और दुःखको मिटानेके लिये हमें क्या उपाय करना चाहिये, यह तुम जानते हो ?

पहले नम्बरके लड़केने कहा—हाँ गुरुजी ? अपने देशके सब लोगोंको बहुत ही मेल रखना चाहिये; क्योंकि मेल न होनेके कारण ही देशका सर्वनाश हुआ है, इसलिये अब हम सबको पुराने वैरभाव और एक-दूसरोंके दोषोंको भूल जाना चाहिये।

दूसरे नम्बरके लड़केने कहा—अपने देशमें हर एक आदमीको ऊँचे विचार, देश-सेवा और बहादुरीका ज्ञान देना चाहिये; क्योंकि अज्ञानसे ही हमारा पतन हुआ है। ऐसी उत्तम शिक्षा बढ़ेगी तभी अपने लोग सुखी होंगे।

तीसरे नम्बरके लड़केने कहा—कोमल और

भड़कीली विदेशी वस्तुओंके व्यवहारसे ही अपने लोग इतने विलासी और नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं। अपने देशके सब लोग स्वदेशी वस्तु काममें लायँगे तभी हमारा देश आबाद हो सकेगा और तभी हमलोग सुखी और बहादुर बन सकेंगे।

चौथे नम्बरके लड़केने कहा—जबतक अपने देशकी स्त्रियाँ नहीं सुधरतीं, तबतक हमलोग कभी भी सुखी नहीं हो सकते।

गुरुजी बोले—ऐसी बात तुम क्यों कहते हो ?

लड़केने कहा—मेरे घरमें मेरी माँ जैसा कहती है, वैसा ही मुझे करना पड़ता है। मेरे पिताजी भी मेरी माकी बात मानते हैं। मेरे बड़े भाई भी भाभी जैसा कहती है, वैसा करते हैं। मेरे दूसरे भाई तो अपनी सासका ही कहना मानते हैं। तीसरा भाई कुँवारा है, वह बड़ी बहिनका कहना मानता है। मेरी मझली बहिनने भी अपनी योग्यता से अपने पतिको वशमें कर लिया है और छोटी बहिन अभी गयी साल ही ब्याही गयी है, इतनेमें ही उसके घरमें उसकी चलने लगी है।

इसके बाद गुरुजीने पाँचवें नम्बरके लड़केको

ओर देखा, उसने कहा—हम कायर हो गये हैं, इसीसे हमारे देशको खराबी हुई है, इसलिये अंग्रेजोंके समान हम भी खूब मजबूत और साहसी हों और अपने पूर्वजोंके समान तथा जापानियोंकी तरह देशको भलाईके लिये प्राण देना सीखें, तभी सुखी हो सकेंगे ।

छटे नम्बरके लड़केने कहा—हमारे देशमें जब विदेशी वस्तुओंका व्यवहार बंद हो जायगा जब नयी-नयी खोज होगी जब नयी-नयी खानें निकलेंगी, जब कातने, पेरने, बुनने और पीसने आदिके घरेलू धंधे फिर पहलेकी भाँति घर-घर चालू हो जायँगे और लोगोंको लूटनेवाले बड़े-बड़े कारखाने बंद करके लोग पूँजीके बलसे गरीबोंके घरेलू धंधोंकी बर्बादीसे हाथ खींच लेगें और गरीबोंको घरसे बेघर करके, उनको शराबी बनाकर, उनके त्यागके बदलेमें बेहकका पैसा अपने घरमें इकट्ठा करना बंद करेंगे, तभी अपना देश आबाद हो सकेगा ।

सातवें नम्बरके लड़केने कहा—अपनेको ऊँचा और खूब पतित होते हुए भी दूसरोंको नीचा मानने

को बुरी भावना मिटेगी, तभी हम सुखी हो सकेंगे।

आठवें नम्बरके लड़केने कहा—कुछ भी स्वार्थ न रखकर जब हम अपने धर्मपर डटे रहकर अपने हरेक कर्मके द्वारा ईश्वरके लिये एक दूसरेकी खूब मदद करेंगे और देशके किसी भी आदमीको दुखी देखकर जब हमारे मनमें सच्ची सहानुभूति और करुणा पैदा होगी तथा हमारा हृदय तड़प उठेगा, तभी अपने देशका कल्याण हो सकेगा।

गुरुजीने कहा—इन सारी बातोंको जाननेसे तुम्हें क्या लाभ हुआ, यह मुझे बताओ।

मगनलालने कहा—अपने देशकी हरकतोंको और उनके उपायोंका जानना हर एक आदमीका कर्तव्य है। इससे तुरन्त कोई लाभ न हो तो भी ऐसी बातें हर एक आदमीको जाननी चाहिये।

मोहनने कहा—जितना सुना है, उतना हमारा ज्ञान बढ़ा है। हमारे मनमें इस प्रकारके बीज पड़े होंगे तो किसी-न-किसी दिन इससे अंकुर भी निकलेगा ही और समय आनेपर उसके पेड़ बन जानेपर फल-फूल भी मिलेंगे ही।

# १८—बालकोंका निश्चय

इसके बाद दूसरे दिन आगे बढ़े हुए होशियार विद्यार्थियोंको अपने पास बैठाकर गुरुजीने कहा—कई दिनोंसे हम अपने देशके कल्याण तथा अपने भाई-बहिनोंकी स्थितिके सम्बन्धमें बातें करते हैं, इनमेंसे तुमलोगोंने क्या सार ग्रहण किया है ? किस निश्चयपर पहुँचे हो सो बताओ ?

रतनलालने कहा—ये सारी बातें सुनकर मैंने तो अभीसे निश्चय किया है कि मुझसे जहाँतक हो सकेगा, रोज कोई भी छोटा-बड़ा अच्छा काम स्वार्थ छोड़कर करूँगा और सबके साथ प्रेम बढ़ाऊँगा।

रणजीतसिंहने कहा—यह सब बातें मैंने सुनी नहीं थीं तबतक मेरी इच्छा थी कि पढ़कर बड़ा

आदमी बनूँगा और अच्छे वेतनकी नौकरी करूँगा; पर अब मनमें ऐसा हो रहा है कि अपने पिताजीसे कहूँ कि मुझे तो लोकसेवाकी किसी संस्थामें स्वयंसेवक बना दें; क्योंकि कर्ल्की या स्वार्थी-लोगोंकी नौकरी करनेसे हमारे अंदर सद्गुण या बहादुरी नहीं बढ़ती। इसलिये मैं अब लोकसेवाके किसी काममें ही पड़ूँगा।

शिवशंकरने कहा—हमारे देशमें अपढ़लोग बहुत हैं, इसलिये पढ़नेके बाद मैं तो सबको मुफ्त पढ़ानेका काम करूँगा। पहले मुझे ऐसा लगता था कि पढ़ानेमें क्या मिलेगा ? पर अब तो मुझे बिना वेतनके गुरुजी होनेका ही मन हो रहा है। मेरी दादीके पास बहुत धन है, इसलिये वेतन लेनेकी मुझे जरूरत भी नहीं है। इससे मैं तो सबको मुफ्त पढ़ाऊगा।

बावरे भटने कहा—मैं तो बड़े आदमियोंकी खूब तारीफ कर-करके उनको छप्परपर चढ़ा दूँगा और हाकिमोंकी खुशामद करके इनाम लूँगा। यह बहुत ही सहज और सस्ता रोजगार है। ऐसा नगद धंधा छोड़कर दूसरी झंझटमें कौन पड़े ?